CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विश्व का सर्वश्रेष्ठ मानव एवं शासक

अशोक

डा० राधा कृष्ण शर्मा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Gr

Guru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalga

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant

विश्व का सर्वश्रेष्ठ मानव एवं शासक

अशोक

डा० राधा कृष्ण शर्मा
(एम० ए०, पीएच० डी०)
(राष्ट्रभाषा परिषद् ग्रन्थ पुरस्कार प्राप्त)
पूर्व प्राध्यापक एवं अध्यक्ष
इतिहास विभाग (स्नातकोत्तर)
राजेन्द्र कॉलेज, छपरा, बिहार

1997

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकाशक :

शर्मा पुस्तक मन्दिर

मोहन नगर, छपरा, (बिहार)

मूल्य : 35 रुपये

मुद्रक :

सिद्धार्थ प्रिन्टर्स, छपरा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समर्पण

सरस्वती के उपासक, साहित्यिक विभूति, अलौकिक प्रतिभा के धनी

सादा जीवन एवं उच्च विचार के प्रतीक

डा० राम प्रसाद मिश्र

सेवा निवृत्त, प्राध्यापक, हिन्दी विभाग,

डी. ए. वी. (सांध्य) कॉलेज, नई दिल्ली

(दिल्ली वि. वि.)

को सादर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राक्कथन

अशोक मानव और शासक या सम्राट दोनों दृष्टियों से महान थे। उनकी जीवनी और उपलब्धि का विवरण हर व्यक्ति के लिए किसी न किसी रूप में मनोरंजक और शिक्षाप्रद है। जन प्रतिनिधियों, शासकों, विधायकों, न्यायाधीशों तथा अन्य सभी प्रकार के पदाधिकारियों और कर्मचारियों के लिए यह पुस्तक बहुत हीं उपयोगी है। यह पुस्तक मार्ग दर्शक का कार्य करेगी।

छात्र-छात्राएं भी देश के भावी निर्माता हैं। उनके लिए भी यह पुस्तक प्रेरणास्रोत का कार्य करेगी। शिक्षक भी लाभान्वित होंगे।

अन्य देशों के नागरिक भी इस पुस्तक से लाभान्वित हो सकते हैं।

अनैतिकता और कर्तव्यहीनता, भ्रष्टाचार और अव्यवस्था के युग में अशोक के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

पुस्तक में सुधार के लिये सुझाव पर सहानुभूति पूर्वक-विचार किया जाएगा।

मोहन नगर, छपरा, बिहार
11 अक्टूबर 1997 ई०
(विजय-दशमी)

लेखक
डा० राधाकृष्ण शर्मा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अशोक का आदर्श

प्रजा सुखे सुखम् राज्ञः प्रजानामच्चहिते हितम् ।
नात्मप्रियं हितम् राज्ञः प्रजानामतु प्रियम् हितम् ।।

कोटिल्य का अर्थशास्त्र 1/19

प्रजा के सुख में राजा का सुख निहित है। प्रजा के हित में उसका हित है। अपना प्रिय करने में राजा का हित नहीं होता, प्रजा के लिये जो प्रिय हो उसे करने में राजा का हित होता है।

❀

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः ।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुखभाग्भवेत् ।।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय - सूची

1	अशोक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व	पृ० 1–57
2	मौर्य सामाज्य का पतन·और अशोक का दायित्व	पृ० 58–65
3	मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण	पृ० 66–68

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बच्चों का बचपन

सोलह वर्षों की अवस्था तक लड़कों का जीवन बड़ा नाजुक होता है। यही समय उनके बनने या बिगड़ने का होता है। इस समय उनका स्वभाव बड़ा ही कोमल होता है और दूसरे लोगों के जीवन का उन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। जैसे कोमल पौवे को जिधर और जैसे चाहें झुका सकते हैं वैसे ही कोमल बच्चों

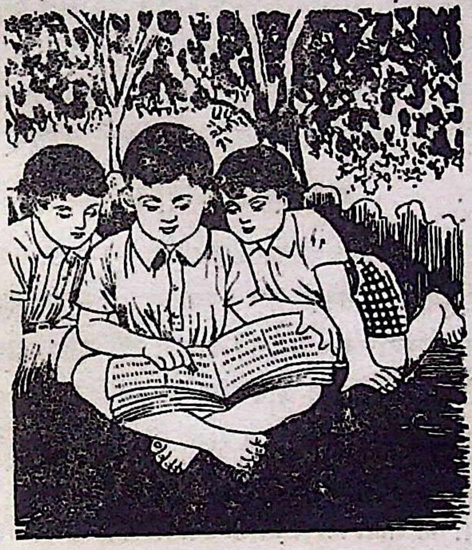

बच्चे पुस्तक पढ़ते हुए

को भी जिधर और जैसे चाहें झुका सकते हैं। उन्हें जैसा बनाने का प्रयत्न किया जायेगा वैसे ही वे बन सकेंगे। इस समय जैसी नींव पड़ेगी वैसी ही उनके जीवन का महल भी तैयार होगा। यदि नींव कमजोर होगी तो जीवन की इमारत भी कमजोर होगी। यदि नींव मजबूत होगी तो जीवन की इमारत भी मजबूत होगी यानी जीवन स्वस्थ एवं सफल होगा। अब भारत स्वतन्त्र है। बच्चे भविष्य की पूँजी हैं, निधि हैं, फसल हैं। आज के बच्चे कल के शासक हैं। वे ही आगे चल कर देश के राष्ट्रपति बन सकते हैं। राज्यपाल, मंत्री, विधायक तथा दूसरे कितने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उच्च पदों पर जा सकते हैं। किन्तु कब ? जबकि वे चरित्रवान हों, पढ़ें-लिखें हों और योग्य हों। इसलिये देश के बच्चों को हर तरह से योग्य बनाने का प्रयत्न करना चाहिये।

यदि बच्चों के माता-पिता, अभिभावक, गुरु और साथी योग्य और चरित्रवान हैं तो बच्चों का जीवन सफल होगा। दुश्चरित्र लोगों के सम्पर्क में रहने से बच्चों का जीवन असफल और कष्टदायक होगा।

बच्चों को योग्य बनाने का एक उपाय यह भी है कि उन्हें देश-विदेश के महापुरुषों की जीवनियों से परिचित कराया जाय। यह बड़ा ही सुन्दर उपाय है। एक बड़े कवि का कहना है कि महापुरुषों के जीवन हमें याद कराते हैं कि हम भी अपना जीवन उनकी तरह उत्तम बना सकते हैं। वे ऐसा रास्ता दिखाते हैं जिस पर चलकर बच्चे अपना जीवन अच्छा और सफल बना सकते हैं।

सयानों का जीवन

लेकिन यदि बचपन में बच्चों का जीवन नहीं सुधरा तो सयान (वयस्क) होने पर भी जीवन का सुधार हो सकता है। युवावस्था में मनुष्य का मन बड़ा चंचल रहता है। यदि सोच-विचार कर मन को काबू में नहीं रखा जाय और ठीक-ठीक नहीं चला जाय तो पैर के फिसल जाने और गढ़े में गिर जाने का सदा ही डर बना रहता है। लेकिन मन को काबू में रखने और ठीक-ठीक से चलने के लिए यह जरूरी है कि बड़े लोग जो रास्ता दिखला गये हैं उसी रास्ते पर चला जाय। इस तरह महापुरुषों की जीवनियाँ पढ़ने से सयानों को भी लाभ होता है। अतः कवि बहुत ही ठीक कहता है कि—

"सज्जन चरित सिखाते जग में
कर सकते हैं निज उज्जवल
जग से जाते समय रेत पर
छोड़ निज चरण निर्मल।"

महापुरुष कौन है ?

यहाँ यह भी जान लेना चाहिये कि महापुरुष या आदर्श मानव किसे कहते हैं ? सभी मनुष्य महापुरुष या आदर्श व्यक्ति नहीं होते हैं। बहुत ही कम मनुष्य

RājGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को महान या आदर्श व्यक्ति कहलाने का सौभाग्य प्राप्त होता है। रूपमान को महापुरुष नहीं कहते हैं। ऐसे ही धनवान को भी महापुरुष नहीं कहते हैं। लाख-पति, करोड़पति या अरबपति महापुरुष नहीं कहला सकता। विशाल शरीर वाला या बड़े पद पर बैठने वाला भी महापुरुष नहीं समझा जाता। बहुत वर्षों तक जीने वाला भी महापुरुष नहीं कहा जाता। मनुष्य सुकर्म से महान बनता है, लम्बा जीवन से नहीं। इस तरह महापुरुष का मापदण्ड शक्ति, आयु, रूप, धन या पद हो ही नहीं सकता। उसका असली मापदण्ड तो चरित्र है; हृदय है। महा-पुरुष का जीवन मन, वचन और कर्म से शुद्ध और सात्विक होता है। 'सादा जीवन, उच्च विचार' ही उसका आदर्श होता है। उसमें त्याग-तपस्या, सेवा-सहिष्णुता की भावना कूट-कूट कर भरी रहती है। वह बड़े हित के सामने छोटे हित को छोड़ने के लिए सदा तैयार रहता है। वह सब में अपने को और अपने में सबको देखता है।

महापुरुष उसी मनुष्य को कहते हैं जिसका चरित्र उत्तम है, जिसके आचार और विचार दोनों ही पवित्र हैं, जिसकी कथनी और करनी एक समान है, जिसके साधन और साध्य में कोई अन्तर नहीं है, जो दूसरे के हित की बात अधिक सोचता है और जो सबसे बढ़कर सभी प्राणियों से, जीवमात्र से प्रेम करता है। महापुरुष कबीर की वाणी को सत्य मानता है कि ढाई अक्षर प्रेम का पढ़ने वाला ही वास्तव में पंडित या ज्ञानी है। वह संत तुलसी दास के कथन में भी विश्वास करता है कि 'परहित' के समान अन्य कोई धर्म नहीं और 'परपीड़ा' के समान अन्य कोई दुष्कर्म नहीं है।

यह भी याद रखना चाहिये कि मनुष्य जन्म से ही महापुरुष नहीं होता है। वह वंश के आधार पर भी महापुरुष नहीं बनता है। महापुरुष का लड़का महा-पुरुष हो - यह ऐतिहासिक सत्य नहीं है। मनुष्य चरित्र और कर्म से ही महापुरुष बनता है। मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं निर्माता होता है। महात्मा ईसा और गाँधीजी इस बात के सर्वोत्तम उदाहरण हैं।

अशोक का महत्व

इस धरती पर समय-समय पर अनेक महापुरुषों का आगमन हुआ है। यह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहुत ठीक ही कहा गया है कि—

धरा जब-जब बिकल होती, मुसीबत का समय आता,
किसी भी रूप में कोई, महा-मानव चला आता।

भारत की पवित्र भूमि पर भी अनेक महापुरुष पैदा हुए हैं। इन्हीं महापुरुषों में अशोक का नाम भी आता है। लेकिन अशोक का नाम भारत के ही महापुरुषों के साथ नहीं बल्कि संसार के महापुरुषों के साथ लिया जाता है। इतना ही नहीं, संसार के महापुरुषों में भी अशोक का नाम सबसे ऊपर आता है। अशोक कोई प्रसिद्ध पहलवान या विख्यात सैनिक नहीं था जिसके कारण वह महान माना जाता हैं। देखने में भी शरीर से अशोक कुरुप ही था। अतः अपने रूप के कारण भी वह महान् नहीं था। धन के कारण भी वह महान् नहीं था। वह तो अपने सुन्दर काम और सुन्दर चरित्र के कारण महान् था। वह भारत में पैदा हुआ था और भारत में राजा भी हुआ था। संसार के दूसरे देशों में भी बहुत राजा-महाराजा हुए हैं। दुनिया का इतिहास राजा-महाराजाओं के नामों से भरा हुआ है। लेकिन अशोक दुनिया का सबसे बड़ा राजा था। देश और विदेश के विद्वान् लोग अशोक की बड़ी प्रशंसा करते हैं। अंग्रेज़ों के देश इंगलैंड में इतिहास का एक बहुत बड़ा लेखक हुआ है। उसका नाम एच० जी० वेल्स है। वेल्स महोदय कहते हैं कि इतिहास के आकाश में हजारों बादशाह ताराओं की तरह टिमटिमाते हैं, किन्तु उनके बीच अशोक का नाम एक चमकीला तारा की तरह चमक रहा है। रूस से जापान तक आज भी उसका नाम आदर के साथ लिया जाता है। चीन, तिब्बत और भारत तक में, जिसने उसके धर्म का त्याग कर दिया है, उसकी महानता की परम्परा सुरक्षित है। सबसे खूबी की बात तो यह है कि अशोक राजाओं में ही बड़ा नहीं था बल्कि मनुष्यों में भी बड़ा था। वह साधारण दर्जे का नहीं बल्कि बहुत ही उच्च दर्जे का मनुष्य था। उसमें मनुष्यता, मानवता और इन्सानीयत के गुण भरे हुए थे। वह महामानव था। वह एक आदर्श पुरुष था।

अशोक भारत का सबसे यशस्वी सम्राट हुआ। वह आर्यावर्त का पहला चक्रवर्ती सम्राट था। लेकिन उसकी महत्ता उसके राज्य विस्तार के कारण नहीं है, बल्कि इसलिए है कि उसने सामान्य लोगों के आध्यात्मिक धरातल को ऊँचा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किया, लोक-जीवन में नैतिक तत्वों का विकास किया और भारत जैसे विशाल देश में सांस्कृतिक एकता स्थापित की। सम्राट अशोक से बौद्ध अशोक या प्रियदर्शी अशोक का स्थान अधिक ऊँचा है।

ऐसे अशोक की कहानी बहुत ही मनोरंजक और शिक्षाप्रद है। निश्चय वाली है। निश्चय ही कोई भी बच्चा या बच्ची, लड़का या लड़की अशोक की जीवनी से आगे बढ़ने और अच्छा काम करने के लिए प्रेरणा प्राप्त कर सकता है।

मगध और पाटलिपुत्र

आज से लगभग पचीस सौ वर्ष पहले भारत में सोलह राज्य थे। ये राज्य बड़े बड़े थे। वे स्वतन्त्र भी थे। उस समय आजकल की तरह कोई केन्द्रीय सरकार नहीं थी। इन राज्यों को जनपद या महाजनपद कहते थे। उन राज्यों में मगध बहुत प्रसिद्ध था। वह बहुत ही शक्तिशाली भी था।

आजकल पटना और गया जिले के अन्दर जो भू-भाग है वही भू-भाग प्राचीन काल में मगध जनपद के अन्दर था।

सबसे पहले मगध की राजधानी गिरिव्रज में थी उसके बाद राजगृह में राजधानी कायम हुई। राजगृह के बाद पाटलीपुत्र को राजधानी का रूप प्रदान किया गया। एक ग्राम में पाटलि नाम के पौधे थे। उनके फूल लाल और सुन्दर होते थे। इस तरह वह ग्राम पाटलि ग्राम कहलाता था। वही ग्राम बाद में पाटलिपुत्र कहा जाने लगा। आधुनिक काल में पाटलिपुत्र पटना के नाम से विख्यात हुआ। उसे पुष्पपुर या कुसुमपुर भी कहते थे।

प्राचीन भारत में दो प्रकार की शासन प्रणाली प्रचलित थी—गणतन्त्र और राजतन्त्र। गणतन्त्र में कोई वंशानुगत राजा नहीं होता था। कुछ निश्चित अवधि के लिए एक प्रमुख का चुनाव होता था। लेकिन राजतन्त्र में वंशानुगत राजा होता था। पिता के मरने के बाद उसका बड़ा लड़का गद्दी पर बैठता था।

मगध में राजतन्त्र प्रणाली का ही प्रचार था। बिम्बिसार वहाँ का प्रसिद्ध राजा हुआ था। वह महात्मा बुद्ध का समकालीन था। उसके बाद अजातशत्रु राजा हुआ। अजातशत्रु का लड़का उदायी था। उदायी ने ही पाटलिपुत्र नगर का निर्माण किया। उसी ने पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी बनायी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मौर्य साम्राज्य प्रारम्भ

मगध अपने राज्य का विस्तार कर रहा था। उसका शासन साम्राज्यवादी था। मोरिय नाम का एक गण था। मगध ने इसे भी अपने राज्य में हड़प लिया। मोरिय गण में ही एक रानी के कोख से चन्द्रगुप्त का जन्म हुआ। रानी पाटलिपुत्र में ही रहती थी। चन्द्रगुप्त होनहार कुमार था। वह तेज और साहसी था।

उसी समय तक्षशिला में चाणक्य नाम एक ब्रह्मण रहता था। वह भी चतुर और विद्वान् था। एक बार नन्दवंश के एक राजा ने उसका अपमान किया था। चाणक्य ने नन्दवंश को नष्ट कर देने के लिए प्रतिज्ञा की।

चाणक्य चन्द्रगुप्त के गुणों से बड़ा प्रभावित था। चाणक्य के सहयोग से चन्द्रगुप्त ने नन्दवंश को नष्ट कर दिया। उसने अपना राजवंश कायम किया। यह इतिहास में मौर्य वंश कहलाता है। इस तरह चन्द्रगुप्त मौर्यवंश का संस्थापक था।

चन्द्रगुप्त मौर्य बड़ा ही वीर तथा लड़ाकू था। चाणक्य उसका मंत्री था। चन्द्रगुप्त ने आस-पास के भू-भागों को जीत लिया था। उसने यवनों को भी लड़ाई में पछाड़ दिया था। वह योग्य शासक भी था। उसकी शासन प्रणाली अच्छी थी। उसके दरबार में यूनान से एक दूत आया था। उसका नाम मेगास्थानीज था।

चन्द्रगुप्त का लड़का विन्दुसार था और विन्दुसार का लड़का अशोक था।

चाणक्य बुद्धिमान, व्यावहारिक और दूरदर्शी था। उसने अर्थ-शास्त्र के नाम से एक प्रमुख ग्रन्थ की रचना की थी। चाणक्य को ही विष्णुगुप्त कहते हैं। वह कौटिल्य के नाम से से भी प्रसिद्ध है।

चाणक्य चन्द्रगुप्त और विन्दुसार दोनों के सलाहकार थे। चन्द्रगुप्त ने एक विशाल साम्राज्य कायम कर लिया था। विन्दुसार ने उस साम्राज्य की रक्षा की और उसका विस्तार भी किया। चाणक्य के बाद राधागुप्त प्रमुख सलाहकार नियुक्त हुआ था।

अशोक की प्रारम्भिक जीवनी

प्राचीनकाल में सम्राटों को बहुत रानियाँ हुआ करती थीं। विन्दुसार को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भी कई रानियाँ थीं और उसे कई लड़के भी थे। उसकी एक रानी थी शुभद्रांगी। शुभद्रांगी के कोख से दो पुत्र पैदा हुए थे, अशोक और तिष्य। इस तरह अशोक और तिष्य दोनों सहोदर भाई थे। ऐसे तो अशोक के सौतेले भाइयों की संख्या बहुत ही अधिक थी। अशोक बहुत ही धीर गंभीर और बुद्धिमान था किन्तु अपने पिता का दुलरुआ नहीं था। अशोक से भी बड़ा विमाता पुत्र सुषीम (सुमन) था। सुषीम को विन्दुसार बहुत प्यार करता था। विन्दुसार सुषीम को ही अपने बाद राजगद्दी पर बैठाना चाहता था। लेकिन सुषीम में राजा होने का कोई गुण नहीं था। उसकी बुद्धि मन्द थी। लेकिन अशोक बड़ा होनहार था और उसकी बुद्धि बड़ी तेज थी। राज-परिवार और अड़ोस पड़ोस के सभी लोग अशोक को बहुत प्यार करते थे। साधु-सन्त भी कहा करते थे कि अशोक प्रतिभाशाली राजा होगा। राजा के सभी गुण उसमें दीख पड़ते। अतः अपने पिता के अनुचित व्यवहार से अशोक जरा भी घबड़ाया नहीं, उसकी माँ भी शान्त रही। अपने पिता का लाड़-प्यार नहीं मिलने पर भी अशोक उनका आज्ञाकारी ही बना रहा।

गुण या योग्यता का महत्व

गुण की सर्वत्र पूजा होती है—योग्यता की सर्वत्र पूछ होती है। योग्य और गुणी व्यक्ति का सभी जगह सम्मान होता है। विन्दुसार अपने सभी पुत्रों के गुण-अवगुणों से परिचित था। वह अशोक में कई गुणों को देखता था। वह अशोक की योग्यता से भी प्रभावित था। विन्दुसार के प्रमुख सलाहकार राधागुप्त पर भी अशोक का प्रभाव था। इस तरह प्रायः सभी लोग अशोक की कार्यक्षमता के विषय में जानकारी रखते थे।

उज्जैन और तक्षशिला

भारत एक विशाल देश है। मौर्य वंश के समय में भी मौर्य साम्राज्य विशाल था। राजा या सम्राट पूरे साम्राज्य का स्वामी होता था लेकिन शासन की सुविधा के लिए साम्राज्य प्रान्तों में बँटा हुआ था। प्रान्तों में राजा की ओर से सूबेदार नियुक्त किये जाते थे। सूबेदार को उपराज भी कहा जाता था। प्रमुख प्रान्तों में राजकुमार ही उपराज बनाये जाते थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विन्दुसार ने अशोक को पश्चिमी भारत में मालवा का सुबेदार नियुक्त किया। मालवा की अवन्ती या उज्जैन भी कहते थे। अशोक अपने पिता की आज्ञा के अनुसार उज्जैन चला गया। वहाँ वह योग्यता के साथ राज-काज सँभालने लगा। सूबेदार की हैसियत से अशोक ने बड़ी लोकप्रियता प्राप्त की। उसे काम प्यारा था। उसने अपने कामों से जनता को खुश कर दिया।

सुषीम अशोक का बड़ा भाई था। विन्दुसार ने सुषीम को पंजाब के पास तक्षशीला का सूबेदार नियुक्त किया। सुषीम भी तक्षशिला चला गया। लेकिन सुषीम योग्य नहीं था। वह अपने कार्यों से जनता को खुश नहीं कर सका। अब जनता ने हथियार उठा लिया। उसने बगावत कर दी। लाख कोशिश करने पर भी विद्रोह शान्त नहीं हुआ। सुषीम दुःखी तथा निराश हो गया।

अब बिन्दुसार ने अशोक को तक्षशिला भेजने का निश्चय किया। इस समाचार से तक्षशिला के निवासी बहुत खुश हुए। वे अशोक का स्वागत करने के लिए जोर-शोर से तैयारी करने लगे। राजमार्गों को खूब सजाया गया। जब अशोक तक्षशिला पहुँचा तो उसका खूब स्वागत हुआ। मालूम पड़ता था कि कहीं से कोई जादूगर पहुँच गया। अशोक के पहुचते ही विद्रोह शान्त हो गया। अशोक ने कोई जोर-जुल्म नहीं किया। उसने किसी का खून भी नहीं बहाया। उसने किसी को डराया-धमकाया भी नहीं। उसने अपनी बुद्धि के बल से विद्रोह शान्त किया। अब तो चारो ओर अशोक का गुणगान होने लगा।

कुछ समय के बाद अशोक पाटलिपुत्र लौटा और वहाँ से फिर उज्जैन चला गया।

अशोक का विवाह

अशोक उपराज बनकर पाटलिपुत्र से उज्जैन की यात्रा कर रहे थे। वे रास्ते में विदिशा नामक नगरी में कुछ दिन के लिए रूक गये थे। विदिशा को भिलसा भी कहते थे। यह एक सुन्दर और समृद्ध नगरी थी।

उसी नगरी में एक सेठ रहता था। उसकी एक लड़की थी जिसका नाम था देवी। देवी सुन्दर और योग्य कन्या थी। अशोक और देवी दोनों का विवाह हो गया। यह ईसा से 285 वर्ष पूर्व की बात है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देवी की कोख से एक लड़की और एक लड़का पैदा हुए। लड़की का नाम संघमित्रा और लड़के का नाम महेन्द्र था। उसे कुछ और बाल-बच्चे हुए थे।

अशोक का राज्याभिषेक

अब विन्दुसार बहुत बूढ़ा हो गया था। अशोक जब तक्षशिला का विद्रोह दबाने में लगा हुआ था उसी समय विन्दुसार मर गया। अब मगध की गद्दी खाली हो गयी। गद्दी के लिए बहुत से दावेदार थे। सुषीम राजा बनने के लिए बेचैन था। वह था भी विन्दुसार का बड़ा बेटा। किन्तु बड़ा बेटा होने ही से क्या हुआ जबकि उसमें योग्यता नहीं थी। लोगों की राय थी कि अशोक को ही गद्दी पर बैठाया जाय। प्रधानमंत्री राधागुप्त भी यही चाहते थे। अतः सबों की राय से अशोक गद्दी पर बैठाया गया। वह ईसा से 272 वर्ष पहले का युग था।

कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि अशोक अपने 99 भाइयों को मार कर गद्दी पर बैठा था। किंतु आजकल के इतिहास लेखक कहते हैं कि यह बात बिल्कुल गलत है। पहिले तो 99 भाइयों का होना संदेहात्मक है। दूसरे कुछ इतिहासकारों का अनुमान है कि सिंहली गाथा में 99 भाइयों की हत्या का उल्लेख बौद्ध धर्म की महत्ता दिखाने के लिए किया गया हो। इसका यह उद्देश्य होगा कि अशोक क्रूर व्यक्ति था किन्तु बौद्ध धर्म अपना कर वह एक आदर्श व्यक्ति बन गया। अशोक के राजा होने के बाद भी उसके कई भाई जीवित थे और उनमें आपस में राय थी। अशोक अपने भाइयों और बहिनों से प्यार करता था। लेकिन यह संभव है कि गद्दी के लिए भाइयों में कुछ लड़ाई-झगड़ा हुआ हो क्योंकि 4 वर्ष बीत जाने पर अशोक के राजा होने का उत्सव बड़े धूम-धाम से मनाया गया। लड़ाई में सुषीम और उसके साथ कुछ अन्य लोग मारे गये।

कलिंग युद्ध के पहले का अशोक

गद्दी पर बैठने के बाद 12 वर्ष तक अशोक के राज्य में कोई मुख्य घटना नहीं घटी थी। सभी राजाओं की तरह अशोक भी आनन्द का जीवन बीता रहा

---

1 अशोक के जीवन के भद्दा पक्ष के लिए देखिये अशोकावदान और हिन्दुस्तान टाइम्स, पटना, 24 मई, 1997, पृ० 111

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

था। वह भी तड़क-भड़क, शान-शौकत पसन्द करता था। वह शिकार खेलता था और मांस-मछली भी खाता था। उसे नाच-गान, रास-रंग में भी बड़ा आनन्द आता था। अन्य राजाओं की तरह वह भी सत्ता एवं शक्ति की भक्ति करता था। उसके पास भी एक बहुत बड़ी अच्छी सेना थी। सेना के पास लड़ने के बहुत सामान भी थे।

अशोक भी अपने राज्य को बढ़ाना चाहता था। उस समय दूसरे के राज्य को जीत कर अपना राज्य बढ़ाना सभी चाहते थे। अभी भी ऐसी बात देखने में आती है। अशोक ने सबसे पहले काश्मीर पर चढ़ाई की और वह सफल भी हुआ। उसने नेपाल को जीत कर उसे अपने साम्राज्य में मिला लिया। उसके बाद उसका

युद्ध का दृश्य

ध्यान कलिंग की ओर गया। अशोक से पहले कलिंग मगध राज्य में मिला लिया गया था। किन्तु विन्दुसार के समय में ही यह मगध से अलग हो गया। विन्दुसार ने इसे अपने राज्य में मिला लेना चाहा। लेकिन वह असफल रहा। कलिंग को ही आजकल उड़ीसा कहते हैं। यह मगध के दक्खिन में कायम था। कलिंग को स्वतन्त्र छोड़ देना अशोक अपनी प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझता था। स्वतन्त्र और शक्तिशाली कलिंग कभी मगध की सुरक्षा के लिए खतरनाक भी हो सकता था। वह कभी मगध पर हमला भी कर सकता था। कलिंग व्यापार का भी एक प्रमुख

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

केन्द्र था। इसको मगध साम्राज्य में मिला लेने से सम्राट की इज्जत बहुत बढ़ जाती थी। इससे मगध साम्राज्य का विस्तार भी होता और यह समुद्र के किनारे तक पहुँच जाता। इससे व्यापार में वृद्धि होती और व्यापार बढ़ने से लोग सुखी होते। सरकार का भी धन बढ़ता।

अतः अशोक ने प्रतिज्ञा की कि कलिंग को फिर से जीत कर मगध राज में मिला लिया जायगा। कलिंग भी मामूली राज्य नहीं था। वहाँ का राजा 'कुम्हर बतिया' की तरह कमजोर नहीं था। उसके पास बहुत धन था। उसके पास बहुत बड़ी सेना भी थी और उसके सैनिक बड़े बहादुर तथा देशभक्त थे।

अशोक चाहता था कि कलिंग उसकी अधीनता मान ले तो युद्ध नहीं किया जाय। यह सोचकर अशोक ने कलिंग के राजा के पास अपने दूत से संदेश भेजा। कलिंग के राजा ने दूत का आदर-सत्कार किया। किन्तु अशोक के सन्देश को सुनकर वे दुःखी हुए। स्वतन्त्रता सभी चाहते हैं और कोई भी उसे आसानी से छोड़ना नहीं चाहता। कलिंग-राजा ने भी अशोक के दूत से कहा—"भाई, अशोक महाराज का हम क्या बिगाड़े हैं कि ये हमारी स्वतन्त्रता का अपहरण करना चाहते हैं। हम तो अपनी स्वतन्त्रता नहीं छोड़ेगे।"

जब दूत ने अशोक को सारी बातें बतलायी तो वह आगबबूला हो गया। अभी अशोक में राजसी और तामसी प्रवृत्ति की प्रधानता थी। अभी वह अहंकारी था। वह दूसरे को हराकर-कुचलकर आगे बढ़ना चाहता था। उसने कलिंग पर चढ़ाई करने के लिए निश्चय कर लिया। अशोक ने अपने राज्य काल के 13 वें वर्ष में कलिंग पर हमला कर दिया। इसके लिए उस समय कोई कारण नहीं था। कलिंग की सेना में पैदल लड़ने वाले लोग थे और उसमें हाथी-घोड़े भी थे। अशोक की सेना भी बहुत बड़ी थी। अशोक स्वयं ही सेनापति का काम करता था। वह कुशल और साहसी सेनापति था। दोनों सेनाओं में घमासान लड़ाई हुई। कलिंग वाले बड़ी बहादुरी से लड़े। लेकिन एक कहावत प्रसिद्ध है कि अन्त भला तो सब भला। पर अन्त में कलिंग वाले ही हार गये। अशोक ही जीत गया।

कलिंग-विजय का प्रभाव

प्रत्यक्ष रूप में यह कलिंग विजय है पर परोक्ष रूप में यह अशोक का हृदय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विजय कहा जा सकता है। इससे वैयक्तिक, सामाजिक, राजनीतिक और अंतर्राष्ट्रीय जीवन में एक मोड़ उपस्थित हुआ। यह मोड़ विश्व इतिहास का मोड़ है। कलिंग युद्ध को 'इतिहास की भी एक निर्णयात्मक घटना' कहते हैं। 1

कलिंग के युद्ध ने मगध तथा भारत के इतिहास में एक नये युग का सूत्रपात किया। यह युग शान्ति, सामाजिक, प्रगति तथा धार्मिक प्रचार का युग था। कलिंग की विजय एक महत्वपूर्ण घटना थी। इसके बाद मौर्यों की जीतों तथा राज विस्तार का वह दौरा समाप्त हो गया जो बिम्बिसार द्वारा अंग राज्य को जीतने के बाद से आरम्भ हुआ था। यहीं से सैन्य-विजय तथा दिग्विजय का युग समाप्त हो गया तथा आध्यात्मिक विजय और धम्म विजय का युग आरम्भ हुआ। 1-क

अशोक को विजय तो मिली किन्तु यह विजय बड़ी महँगी थी। लड़ाई में एक लाख लोग मारे गये, डेढ़ लाख लोग कैद हुए और इनके कई गुणा अधिक लोग उन रोगों से मरे जो लड़ाई के बाद हुए। युद्ध का मैदान मनुष्य के खून से लाल हो गया और घायल लोग वहीं कराह रहे थे। बहुतों की लाशें गिर गयी और उन लाशों पर कौवे, कुत्ते तथा गीध झुकने लगे। बहुत औरतें विधवा बन कर असहाय हो गयीं। बहुत बच्चों के बाप मर गये और अब वे भिखाड़ी हो गये। जिन स्त्रियों का सुहाग लूट गया और जिनकी गोद खाली पड़ गयी वे फूट फूटकर रोने लगीं घर-घर में शोक फैल गया। लोग भयभीत हो गये।

अशोक पहले मानव था, तब वह राजा था। अशोक का दिल दया से द्रवित हो गया और उसकी आँखों में आँसू भर आये। अशोक के दिल में बड़ा दुःख-दर्द हुआ। क्यों? यह सोच कर कि इतने लोगों को मार कर यह जो विजय प्राप्त की गई वह विजय किस काम की! मनुष्य, मनुष्य का खून बहावे—यह तो घोर पाप है, अन्याय है। यह कुकर्म है, दुष्कर्म है। यह ऐसा अपराध है जिसे क्षमा नहीं की जा सकती। किसी भी दृष्टि से इसे उचित नहीं कहा जा सकता।

1-क डा० हेमचन्द्र राय चौधरी, प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास, इलाहाबाद, 1991, पृ० 270।

1 सिन्हा (वी० पी०) एवं सहाय (एस० एस०) प्राचीन भारत, वाराणसी, 1966 पृ० 171।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गलती करना मनुष्य के लिए स्वाभाविक है किन्तु गलती करके उसे नहीं समझना या उसे स्वीकार नहीं करना मूर्खता है, अज्ञानता का परिचय देना है। अशोक ने अपनी गलती समझी -- अपनी गलती स्वीकार की। उसने अपनी गलती के लिए पश्चाताप किया। डा० रोमिला थापर के मतानुसार अशोक का अनुताप अस्थायी मानसिक उत्तेजना के वशीभूत नहीं था वरन् ऐसे व्यक्ति सोद्देश्य पश्चाताप था जो जानता था कि उसके कारण जनता को कितना दुःख हुआ है। 1ख

अशोक को अपनी करनी पर बड़ा पछतावा हुआ। किन्तु 'अब पछताए होत क्या, जब चिड़िगा चुंग गई खेत।' फसल बर्बाद हो जाने पर किसान पछता कर ही क्या कर सकता है। अशोक भी बीती हुई बात पर पछता कर क्या करता। वह न तो मरे हुए लोगों को जिन्दा कर सकता था और न घवाहिलों के घाव को भिटा सकता था। हां, वह आगे के लिए कुछ कर सकता था और उसने कुछ किया भी।

युद्ध से घृणा

कलिंग के युद्ध क्षेत्र में प्राणियों की निर्मम हत्या और बहती हुई रक्तधारा ने उसके हृदय के सुप्त करूण, दया, स्नेह, ममता आदि भावों को जागृत कर दिया। अब परम्परावादी, भौतिक एवं क्रूर सम्राट अशोक के स्थान पर नवीन, दयालु सम्राट अशोक का जन्म हुआ। अब वह उस पथ का पार्थिव बन गया जिसके बारे में तुलसी ने कहा था - दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान, तुलसी दया न छोड़िये जब लगि घट में प्राण।

अशोक ने अपने मन ठान लिया कि 'अब मैं भी कभी युद्ध नहीं करूंगा।" उसने अपनी तलवार को बराबर के लिए म्यान में बन्द कर दिया। मगध के राजा बिम्बसार ने विजय और साम्राज्य बढ़ाने की जिस परम्परा को कायम किया था, अशोक ने उसे छोड़ दिया। वह अब सैनिक शक्ति या पशुबल को बेकार समझने लगा। वह भूमि-विजय के बदले हृदय-विजय को अधिक अच्छा समझने लगा। उसने देश के बदले दिल को ही जीतने का निश्चय किया। अब वह राजनीति के बदले धर्म में अधिक दिलचस्पी लेने लगा। अब अशोक अहिंसा का समर्थक बन गया। अब उसने धर्मयात्रा और धर्म-विजय करने की नीति अपनायी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसने अपने धर्मलेख में घोषित किया था कि "धर्म-विजय ही असली विजय है" तथा इससे लोक और परलोक दोनों में अच्छा फल मिलता है।

इस तरह कलिंग के युद्ध ने अशोक को बदल दिया। कलिंग के पहले के और बाद के अशोक में बहुत अन्तर पड़ गया। पहले का अशोक राजा और स्वामी था किन्तु बाद का अशोक महात्मा और सेवक था। पहले वह क्रूर था—कठोर था। अब वह दयालु बन गया। पहले का चण्डाशोक धर्माशोक हो गया। सांसारिक अशोक धार्मिक अशोक बन गया। अब वह देवताओं का प्रिय या प्रियदर्शी अशोक कहलाने लगा और उसका राज्य धर्मराज्य बन गया। उसने घोषणा की कि "कलिंग में जितने लोग नष्ट और बन्दी हुए उनके सौवें या हजारवें भाग को भी अब यदि हानि होगी तो मुझे बड़ा दुःख होगा।"

दुनिया के इतिहास में ऐसे तो बहुत उदाहरण मिलेंगे कि लड़ाई में हारने के बाद बादशाह या सेनापति लड़ाई करने से भाग जाते हैं किन्तु लड़ाई में जीत कर लड़ाई छोड़ देने का उदाहरण केवल एक ही है। अशोक ही ऐसा महापुरुष है जिसने युद्ध में विजयी होकर भी आगे युद्ध नही करने के लिए प्रतिज्ञा कर ली। उसके पास शक्ति थी, सेना थी, धन था। उसके पास सब कुछ थे किन्तु विजयी अशोक ने लड़ाई नहीं करने के लिए निश्चय कर लिया। उसने दिखाने के लिए या लोकप्रियता के लिए प्रतिज्ञा नहीं की। उसने अपनी प्रतिज्ञा का पूरा पालन भी किया। मनसा, काया, कर्मणा, मन, वचन और कर्म, तन और धन सब प्रकार से उसने अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा की और उसका पालन किया। प्राण-पीड़ा से विह्वल हो, प्रेम और शान्ति की प्रेरणा से कार्य करने वाला अशोक सचमुच ही संत बन गया।

बौद्ध धर्म

उस समय प्राचीन भारत में बौद्ध-धर्म का प्रचार हो रहा था। इस धर्म के चलानेवाला महात्मा बुद्ध थे। बुद्ध बहुत बड़े त्यागी थे। ये राजा के लड़के थे। इन्हें भोग-विलास के लिए सभी सामान मौजूद थे। किन्तु इन्हें राज-पाट, धन-दौलत, भोग-विलास, परिवार, पत्नी और पुत्र में वास्तविक सुख-शान्ति का अनुभव नहीं हो रहा था। इन्होंने सब परिवार, पत्नी, पुत्र, राज-पाट, धन-दौलत को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठुकरा कर साधु का वेष बना लिया। किस लिए ? असली सुख के लिए, लोक-सेवा के लिए; सच्ची शान्ति के लिए। इन्होंने वास्तविक सुख-शान्ति का रास्ता खोज निकला। इन्होंने मध्यम मार्ग पर जोर दिया। इसका मतलब है कि मनुष्य को अति (बहुत) से बचना चाहिए। न तो बहुत भोग करना चाहिए और न बहुत तप करना चाहिए। बहुत अधिक सुख और दुःख दोनों ही बुरे होते हैं।

महात्मा बुद्ध

बुद्ध ने शुद्ध आचार-विचार और सेवा-सादगी को बहुत महत्व दिया। इन्होंने बतलाया कि बुराई का जबाव भी बुराई से नहीं बल्कि भलाई से देना चाहिए। बैर से बैर शान्त नहीं होता, वह तो मित्रता से ही शान्त हो सकता है। कीचड़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धोने के लिए कीचड़ नहीं चाहिये बल्कि साफ पानी चाहिये। बुद्ध ने अहिंसा का जोरदार समर्थन किया यानी नर-नारियों, पशु-पक्षियों, जीव-जन्तुओं सभी के प्रति दया रखनी चाहिये। झूठ नहीं बोलना चाहिये। किसी की चीज नहीं चुरानी चाहिये। धन जमा नहीं करना चाहिये। नशा करने वाली और बुरे रास्ते पर ले जाने वाली चीजों का व्यवहार नहीं करना चाहिये। ठीक समय पर खाना और सोना चाहिये। बड़ों का आदर और छोटे को प्यार करना चाहिये।

इस तरह हम देखते हैं कि महात्मा बुद्ध का धर्म आचरण से सम्बन्ध रखता है। मन्दिर और मूर्ति, कंठी और माला, चन्दन और टीका यज्ञ और जलसा, बलि और भेंट, देवी और देवता, पंडित और पुरोहित की कहीं कोई जरूरत नहीं है। मनुष्य अपने कर्म से ऊँचा या नीचा बनता है, जन्म या पोशाक से नहीं। जन्म या जाति के आधार पर किसी को महत्व नहीं दिया गया। सबको मुक्ति और सम्मान के लिए अधिकारी समझा गया। नर और नारी में भी कोई भेद-भाव नहीं किया गया। बुद्ध ने इस कहावत को चरितार्थ किया कि 'मन चंगा तो कठौती में गंगा' यानी जिसका मन ठीक है उसके लिए सब जगह गंगा है। उसे कहीं दूर जाकर गंगा में नहाने की जरूरत नहीं है। उसे कहीं तीर्थ-यात्रा पर जाने की जरूरत नहीं है। जिसका आचरण (चाल-चलन) ठीक है वही तो सुखी और शांत है। उसे वासना कभी नहीं सता सकती है।

मनुष्य के दुश्मन दो तरह के होते हैं—एक भीतरी और दूसरा बाहरी। भीतरी दुश्मन छः प्रकार के होते हैं— काम (वासना), क्रोध, लोभ, मोह, मद (अहंकार) और मात्सर्य (डाह)। इन शत्रुओं पर विजय पाना बड़ा ही कठिन कार्य है। बाहरी दुश्मनों को भीतरी दुश्मनों की अपेक्षा जीतना बड़ा आसान है।

बुद्ध का बाहरी दुश्मन तो था ही नहीं और उन्होंने अपने भीतर के सारे दुश्मनों पर अद्भुत विजय प्राप्त कर ली।

अशोक पर बौद्ध-धर्म का प्रभाव

अशोक को महात्मा बुद्ध का धर्म बहुत ही पसन्द आया। उसने बौद्ध-धर्म को मान लिया। उपगुप्त नाम के बौद्ध-भिक्षु ने अशोक को बौद्ध-धर्म का उपदेश दिया। लेकिन अशोक ने बौद्ध-धर्म की भी सारी बातों को नहीं मान लिया। वह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनी बुद्धि से भी काम लेता था। उसने उन्हीं सभी नैतिक बातों को कबूल किया जिनका पालन करने से चरित्र के बनने में सहायता मिलती थी। डा० आर०के० मुकर्जी ने कहा है कि अभिलेखों का धर्म कोई एक विशेष धर्म या धार्मिक व्यवस्था नहीं थी बल्कि किसी भी जाति या सम्प्रदाय से पृथक एक स्वतंत्र नैतिक नियम था। डा० वी० ए० स्मिथ के अनुसार भी अशोक का धम्म किसी विशेष मत से जुड़ा हुआ नहीं था बल्कि सभी भारतीय धर्मों में वह व्याप्त था। टामस (एफ० डब्ल्यू) ने भी लिखा है–अशोक जो कुछ कहता था वह बौद्ध धर्म के मूल व गहरे सिद्धान्तों से सम्बन्धित नहीं था। उसमें कहीं भी चार सत्य, अष्टांगिक मार्ग, आत्मा का पुनर्जन्म आदि का उल्लेख नहीं है। सेनार्ट ने लिखा है–2

अशोक का बौद्ध-धर्म केवल आचार के सिद्धान्तों का एक समूह था। वह बौध-धर्म के विशेष तथा गूढ़ तत्वों पर कम ध्यान देता था। डा० भण्डार कर के कथनानुसार अशोक किन्हीं विशेष नियमों और व्रतों का यन्त्रवत केवल दिखाने के लिए पालन नहीं करता था वरन् वास्तविक और भीतरी तथ्य की ओर ध्यान देता था ऐसा तथ्य जो आत्मा को ऊँचा उठाता है जिसमें वास्तविक विकास के बीज निहित होते हैं–। 2क उसने बौद्ध-धर्म को कबूल ही नहीं किया बल्कि इसके प्रचार के लिए भी खूब प्रयत्न किया।

अब अशोक के सब पुराने विचार बदल गये। अब वह संयम, सच्चरित्रता, सादगी, शन्ति, सेवा, समानता, सहयोग और सत्य का समर्थक बन गया। वह दया और दान पर जोर देने लगा। उसने काम और क्रोध, मोह और मद, जैसे दुर्गुणों पर विजय पायी। उसमें न कोई लोभ रहा और न उसे किसी लाभ की चिन्ता रही। उसमें अहंकार की भावना नही रह गयी। अब उसे किसी पद, पुरस्कार, पैसा या प्रतिष्ठा के लिए चाह नहीं रह गया। अब उसके धर्म राज्य में भूमि-विजय का कोई महत्व नहीं था, हृदय-विजय का ही महत्व था। बड़ों का आदर और छोटों को प्यार करना चाहिए। दासों, नौकरों और मजदूरों के प्रति भी सद्व्यवहार होना चाहिये। सबको अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये। अशोक ने लोगों को बतलाया कि धर्म-विजय ही असली विजय है। इससे इस

2–अशोक पृ०-207, 2क–वही, पृ०–88।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संसार में सुख मिलेगा और इससे भी अधिक परलोक में सुख मिलेगा।

डा० डी० आर० भण्डारकर के मतानुसार अब अशोक चक्रवर्ती धार्मिक धर्म राजा बनने का अभिलाषी हो गया।

अशोक की यात्रायें

प्राचीन काल में राजा यात्राओं पर जाया करते थे। लेकिन उनकी यात्राएं बिहार के लिए, मौज के लिए होती थी। वे अपनी यात्राओं में शिकार करते थे, मन बहलाव करते थे और आनन्द लूटते थे। लेकिन अशोक की यात्रा धर्म-यात्रा थी। इसे तीर्थ-यात्रा भी कह सकते हैं। अशोक अपनी यात्राओं में श्रमणों, भिक्षुओं तथा अन्य लोगों से मिलते-जुलते थे। वे दान-पुण्य के अनेक कार्य किया करते थे। वे अपनी यात्राओं में असीम आनन्द का अनुभव करते थे।

अशोक ने अपने राज्याभिषेक के बीसवें वर्ष में (248 ईसा पूर्व) अपनी यात्राओं को प्रारम्भ किया।

अशोक ने उपगुप्त के साथ बौद्ध स्थानों का भ्रमण शुरू किया। वे लुम्बिनी गये जहाँ बुद्ध का जन्म हुआ था। वे वहाँ कुछ दिन ठहरे। उन्होने जन्म-स्थान पर पूजा की, दान दिया और वहाँ के लोगों को कर से मुक्त कर दिया।

अशोक कपिलवस्तु गये जहाँ सिद्धार्थ का लालन-पालन हुआ— जहाँ उनका बचपन व्यतीत हुआ था।

अशोक बोधगया गये जहाँ सिद्धार्थ को ज्ञान प्राप्त हुआ था और जहाँ से वे बुद्ध कहलाने के अधिकारी हुए थे। अशोक ने श्रद्धापूर्वक बोधिवृक्ष की पूजा की। उन्होंने एक लाख स्वर्ण मुद्राओं को बाँटा। एक भव्य बिहार (मंदिर) का भी निर्माण कराया गया।

अशोक सारनाथ भी गये। सारनाथ बनारस के निकट है। वहीं बुध ने सर्वप्रथम पाँच भिक्षुओं को उपदेश दिया था। इसी प्रथम उपदेश को धर्मचक्र प्रवर्तन कहते हैं। इस तरह बुद्ध ने एक नवीन धर्म का चक्र आरम्भ किया।

अशोक कुशीनगर भी गये। उसे कुशीनारा भी कहते हैं। बुद्ध को वहीं महापरिनिर्वाण (मृत्यु) प्राप्त हुआ था। कुशीनगर उत्तर-प्रदेश में गोरखपुर जिले में स्थित है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अशोक कुशीनगर से श्रावस्ती गये। श्रावस्ती को सहेट-महेट भी कहते हैं। वे फिर वैशाली गये। अशोक नालंदा भी पधारे। कहते हैं कि नालंदा में अशोक ने बुद्ध के प्रिय शिष्य सारिपुत्र के चैत्य की पूजा की थी।

इस तरह जो भी स्थान महात्मा बुद्ध से सम्बन्धित थे उन सभी स्थानों में अशोक गये। उन स्थानों में उन्होंने कोई न कोई स्मारक भी बनवाया। स्तूप, बिहार, स्मारक आदि बनवाये गये और पत्थरों या स्तम्भ पर लेख अंकित किये गये।

अशोक ने यह भी घोषणा की कि उसे 'बुद्ध, संघ और धर्म' में बड़ी श्रद्धा है। उसने बौद्ध धर्म में मतभेद पैदा करने वालों को डराया-धमकाया भी। पहले शाही रसोई-घर में पशु-पक्षियों का वध होता था और लोग मांस खाया करते थे किन्तु अब ये सब बन्द कर दिये गये। उसने घोषणा की कि "जिसमें जीव हो वह जलाया न जाय। जंगल भी नहीं जलाया जाय। जीव से जीव का पालन नहीं होना चाहिये।" यानी अपने प्राण की रक्षा के लिए दूसरे का प्राण नहीं लेना चाहिये। राजा ने शिकार खेलना बन्द कर दिया।

महात्मा बुद्ध ने बौद्ध संघ का दरवाज़ा सबके लिये खोल दिया था। इसमें आने के लिए कोई रोक नहीं था। अतः कितने निकम्मे लोग भी इसमें चले आये। कितने का चाल-चलन ठीक नहीं था किन्तु अपना स्वार्थ पूरा करने के लिए ही वे संघ में शामिल हो गये। अब जो अपने को बौद्ध कहते थे उनकी जाँच होने लगी। जो सदाचारी नहीं थे उन्हें संघ से निकाल दिया गया। कितने को पीला पोशाक छीन कर समाज में रहने और काम करने के लिए भेज दिया गया। इस तरह हजारों कपटी और चरित्रहीन लोग संघ से हटा दिये गये।

पाटलिपुत्र में बौद्ध सभा

असली बौद्ध धर्म पर विचार करने और बुराइयों को हटाने के लिए पाटलिपुत्र (पटना) में बौद्ध की एक सभा भी बुलायी गयी। इसे तीसरी धर्म सभा (धर्म संगीति) कहते हैं क्योंकि इसके पहले बौद्धों की दो साभाएँ हो चुकी थी पहली सभा राजगृह में और दूसरी सभा वैशाली में हुई थी। तीसरी सभा की बैठक 9 महीने तक होती रही। इसमें बड़े-बड़े बौद्ध इकट्ठे हुए थे। उपगुप्त इसके सभापति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थे। इसमें असली बौद्ध-धर्म पर प्रकाश डाला गया और ढोंगियों को चेतावनी दे दी गयी। उस समय बुद्ध के वास्तविक वचनों व सिद्धांतों का जो रूप स्थिर हुआ उसे बाद में लिपिबद्ध किया गया। 'महाभारत से भी कई गुणा अधिक थेरवादी बौद्ध-धर्म का यह साहित्य त्रिपिटक कहा जाता है। इसी सभा के बाद देश-विदेश में अनेक भिक्षु बौद्ध-धर्म के प्रचार के लिए भेजे गये थे।

इस बौद्ध संगीति के महत्व के सम्बन्ध में हन्टर (डब्ल्यू डब्ल्यू.) ने लिखा है –इसने लगभग आधी मानव जाति के लिए एक साहित्य और धर्म का सृजन किया और शेष आधी मानव जाति के विश्वासों को प्रभावित किया।

बौद्ध-धर्म का प्रचार

धर्म-प्रचार करने के लिए देश के कोने-कोने में साधुओं और भिक्षुओं को भेजा गया। अशोक ने अपने परिवार के लोगों को भी इस काम में लगा दिया। विदेशों में भी शांति एवं प्रेम के सन्देश को फैलाने के लिए दूत भेजे गये। अशोक ने इसके लिए अपने पुत्र महेन्द्र और अपनी पुत्री संघमित्रा को लंका भेजा था। इस तरह अशोक ने पुरुष और स्त्री में कोई भेद-भाव नहीं किया और उसे स्त्री की योग्यता में भी विश्वास था। संघमित्रा भारत की पहली स्त्री है जो विदेश में धर्म-प्रचार के लिए गयी थी। इसी का फल है कि लंका में आज भी बौद्ध-धर्म का प्रचार है। बोध गया में पीपल के गाछ के नीचे बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था। कहा जाता है कि वे लंका जाते समय बोधगया के उस पीपल की एक डाली भी लेते गये थे। उस डाली को वहाँ रोप दिया गया। बताया जाता है कि लंका में अनुराधापुर नामक स्थान पर एक मंदिर के हाते में एक पीपल का गाछ है जो उसी डाली में पैदा हुआ है। यह संसार का सबसे पुराना ऐतिहासिक बृक्ष माना जाता है। एक लेखक का कथन है कि भारत के बोधिवृक्ष को कई बार काट दिया गया था किन्तु अशोक के पुत्र-पुत्री द्वारा रोपित उस मूल बोधिबृक्ष की वह शाखा एक विशाल वृक्ष के रूप में श्रीलंका के प्राचीन अनुराधापुर नगर में आज भी जीवित है। पिछले बाइस सौ सालों से उस बोधिवृक्ष की तरह बौद्ध-धर्म श्रीलंका में सदैव जीवित रहा है।[1]

1—गुणाकरमूले, भारत : इतिहास और संस्कृति, नई दिल्ली-1973, पृ०-60

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संघमित्रा 18 वर्ष की उम्र में और महेन्द्र 20 वर्ष की उम्र में बौध धर्म में दीक्षित हुए थे। महेन्द्र के साथ पाँच और भिक्षु भी गये थे। लंका में संघमित्रा ने भिक्षुणी-संघ और महेन्द्र ने भिक्षु-संघ भी कायम किया था। लंका के अलावा तिब्बत, चीन, जापान, वर्मा आदि कई अन्य देशों में भी बौध-धर्म का प्रचार हुआ। मिस्र, मकदुनियाँ और मध्य तथा पश्चिमी एशिया में भी धर्म के प्रचारक पहुँचे थे। नेपाल भी बौद्ध-धर्म से प्रभावित हुआ था।

महेन्द्र और संघमित्रा के अलावा कुछ अन्य धर्मप्रचारकों का भी नाम जान लेना चाहिए। हिमालय के क्षेत्र में मज्झिम, कस्यप, मूलदेव और महादेव नामक भिक्षु भेजे गये थे। काश्मीर और गांधार में मज्झन्तिक, महाराष्ट्र में महाधर्म-रक्षित और बर्मा (स्वर्णभूमि) में सोन और उत्तर नामक विद्वान गये।

कुछ विद्वानों का कहना है कि पश्चिमी एशिया के कुछ देशों में बौद्ध-धर्म का खूब प्रचार हुआ था। पश्चिमी एशिया के ही अन्दर फिलस्तीन में ईसाई धर्म के संस्थापक महात्मा ईसा पैदा हुए थे। अतः ईसा पर भी बौद्ध-धर्म का प्रभाव पड़ा था। इसी के कारण ईसाई धर्म में भी बौद्ध-धर्म की कई बातें देखा जाती है। बौद्ध-धर्म की तरह ईसाई धर्म भी अहिंसा और सदाचार पर बड़ा जोर देता हैं।

अपनी धर्म-विजय के सम्बन्ध में अशोक ने स्वयं कहा है (13वाँ शिलालेख में) कि 'देवताओं के प्रिय' को धर्म-विजय अपने राज्य में तथा सीमांत प्रदेशो में 6सौ योजन तक (जिनमें 5 राजाओं के नाम भी लिए गए हैं) और दक्खिन की ओर चोल, पाडेय और ताम्रपर्णि राज्य में प्राप्त हुई है। जहाँ तक मेरे दूत नहीं पहुँच सके हैं, वहाँ के लोग भी देवताओं के प्रिय (अशोक) का धर्माचरण, धर्मानुशासन और धर्म-विधान को सुनकर उनका अनुकरण करते हैं।"

अशोक के पहले बौद्ध-धर्म का प्रचार भारत के कुछ स्थानों में था और कुछ थोड़े से लोग इसे मानते थे। किन्तु 'जैसा राजा, वैसी प्रजा' वाली कहावत प्रसिद्ध है। जब अशोक बौद्ध हो गया तो उसकी अधिकांश प्रजा भी बौद्ध हो गयी। विदेशों में भी इसका खूब प्रचार हो गया। अतः अशोक के ही प्रयत्न से बौद्ध-धर्म संसार का धर्म बन गया। डा० भण्डारकर ने लिखा है—अशोक के आदर्श बहुत ऊँचे थे। उसने अपनी बुद्धिमता और आकलन शक्ति को, बौद्ध-धर्म को, जो एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संकीर्ण प्रान्तीय सम्प्रदाय था, विश्वव्यापी धर्म बना देने में लगा दिया। हैवेल के मतानुसार अशोक ने बौद्ध-धर्म के प्रचार के लिए पूर्व में वही कार्य किया जो कि कौन्सैंटाइन ने पश्चिम में ईसाई धर्म के लिए किया। बौद्ध-धर्म के प्रचार की दृष्टि से अशोक की तुलना ईसाई धर्म के एक दूसरे उत्साही प्रचारक संतपाल से भी की जाती है। संसार के मुख्य धर्मों में इसकी भी गिनती होने लगी। इससे भारत का बड़ा नाम हुआ। आज भी भारतीयों को इस पर गर्व है। बौद्ध देशों के लोग आज भी भारत में तीर्थ करने के लिए आते हैं। उनके सहयोग से भारत में बौद्ध तीर्थ स्थानों में मन्दिर, मूर्त्ति, धर्मशाला बने हुए हैं। बोधगया में एक तिब्बती और एक जापानी मन्दिर देखे जाते हैं। मन्दिर भव्य है और उनमें मूर्त्तियाँ भी भव्य एवं सुन्दर हैं। मन्दिरों और मूर्तियों की बनावट बहुत ही आकर्षक और मनोहर है।

धार्मिक सहिष्णुता

यह भी याद रहे कि दुनिया के इतिहास में कई ऐसे धर्म प्रचारक-शासक हुए हैं जिन्होंने दूसरे धर्म को दबा कर अपने धर्म को बढ़ाने का प्रयत्न किया है। अपने धर्म को बढ़ाने के लिए दूसरे धर्म वालों का खून भी बहाया गया है। धर्म के नाम पर कितनी लड़ाइयाँ हुई है। श्री जवाहरलाल नेहरू ने 'विश्व इतिहास की झलक' नामक एक पुस्तक लिखी है। इसमें उन्होंने एक जगह लिखा है कि 'सम्पूर्ण इतिहास' धार्मिक अत्याचार तथा धार्मिक युद्धों से भरा हुआ है और शायद किसी दूसरे नाम की अपेक्षा धर्म तथा ईश्वर के नाम पर बहुत अधिक खून बहाया गया है। बात बिल्कुल सही है। यूरोप में एक समय में ईसाई धर्म के अनुयायी दो शाखाओं में बँट गये थे—कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट। इन दोनों शाखाओं में संबंध अच्छा नहीं था। दोनों में कटुता थी और वे आपस में लड़ते रहते थे। वे एक दूसरे का खून बहाने में जरा भी संकोच नहीं करते थे। इस तरह दोनों पक्षों के बहुत से लोग मारे गये। जर्मनी में तो दोनों शाखाओं के बीच लड़ाई हुई और वह लड़ाई तीस वर्षों तक चलती रही। इसीसे अनुमान लगाया जा सकता है कि कितना रक्तपात हुआ होगा, कितनी सम्पत्ति बर्बाद हुई होगी। मध्य युग में यूरोप के ईसाइयों और एशिया के मुसलमानों के बीच दीर्घ-काल तक युद्ध होता रहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसे धर्म युद्ध कहा जाता है। एक धर्म-युद्ध में यूरोप के बहुत बच्चों ने भी भाग लिया था और वे सभी बीमारी व मृत्यु के शिकार बन गये। धर्म-युद्धों के कारण धन-जन की बहुत बर्वादी हुई। किन्तु यह मनुष्य की मूर्खता का फल है। धर्म और ईश्वर के नाम पर जहाँ आपस में मेल-जोल—

बढ़ाना चाहिये वहाँ लड़ाई झगड़ा करना और खून बहाना मूर्खता के अलावा क्या हो सकता है? लेकिन यह मूखता तो कम-वेश वर्त्तमान युग में भी दीख पड़ती है। हिन्दुस्तान में कभी-कभी हिन्दू धर्म और इस्लाम धर्म के अनुयायियों में—हिन्दुओं और मुसलमानों में मनमुटाव और झगड़े हो जाया करते हैं। कभी-कभी तो हिन्दुओं और मुसलमानो की विभिन्न शाखाओं में भी लड़ाई-भिड़ाई हो जाती है। किन्तु अशोक आधुनिक युग से भी आगे था। वह बड़ा महान् व्यक्ति था। उसके पास शक्ति थी, सब कुछ थे। परन्तु वह किसी धर्म को दबाकर बौद्ध धर्म को बढ़ाना नहीं चाहता था। वह तो सभी धर्मों का आदर करता था। धार्मिक होते हुए भी वह बहुत सहिष्णु था, बड़ा उदार था। वह सभी धर्मों की उन्नति चाहता था। वह आपस में मेल-जोल बढ़ाना चाहता था। उसने बौद्धों को दान दिया तो दूसरे को भी दान दिया। उसने कहा था कि 'मैं समस्त धार्मिक जातियों को दान देकर या दूसरे प्रकार से पूजा करता हुँ." उसने यह घोषणा की कि "जो दूसरे धर्म को हानि पहुँचा कर अपने धर्म को बढ़ाना चाहता है वह वास्तव में अपने धर्म को ही हानि पहुँचाता है और अपमानित करता है। किसी न किसी कारण से सभी धर्म आदर पाने के अधिकारी हैं। जो सभी मतों का आदर करता है वह अपने मत का इज्जत को भी बढ़ाता है और साथ ही दूसरे मतो और लोगों की सेवा भी करता है।" इस तरह अशोक सभी धर्म वालों में मेल-जोल और भाई-चारे का सम्बन्ध बढ़ाने के लिए लालायित था। $22\frac{1}{2}$ सौ वर्षों के बाद महात्मा गाँधी अशोक के ही विचारों का प्रचार करते थे।

अतः अशोक का जो धर्म था वह वास्तव में सभी धर्मों का निचोड़ था। उसने सभी धर्मों की अच्छी बातें थीं। वह नैतिक सिद्धान्तों से भरा हुआ था। उसके धर्म को मानव-धर्म कहना अधिक उचित है। उसके धर्म को दुनिया में कहीं भी, कोई भी और कभी भी अपना सकता है। उसका धर्म सब समय के लिए और सभी लोगों के लिए हितकारी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अशोक ने धार्मिक सहिष्णुता की उदार नीति अपनाकर तथा सभी प्रचलित सम्प्रदायों के सिद्धांतों को समान रूप से सम्मान देकर सभी धर्मों के मूल तत्वों की वृद्धि में महान योगदान दिया। वस्तुत: सर्व-साधारण के लिए स्वयं भगवान बुद्ध का यही सन्देश था जिसे अशोक ने भली-भाँति हृदयंगम किया और उसके विश्व-प्रेम, दया, करूणा, मैत्री एवं अहिंसा के पावन सिद्धांतों को कार्यान्वित करने में अपनी सारी शक्ति एवं साम्राज्य के अपार साधनों को लगा दिया। उसके धम्म घोष देश और विदेश में सर्वत्र गुंज उठा और देखते-देखते उसके ही काल में भारत का यह स्थानीय धर्म विश्व धर्म के रूप में परिणत हो गया।–1

भण्डारकर के मतानुसार अशोक की धार्मिक सहिष्णुता के पीछे कोई राज-नीतिक उद्देश्य नहीं था। अत: उसकी सहिष्णुता पूर्ण रूप से शुद्ध सामग्री के समान थी।

धर्म प्रचार का फल

चन्द्रगुप्त और बिन्दुसार के ही समय में भारत का विदेशों से सम्पर्क बढ़ा था। इनके समय में पाटलिपुत्र में मिस्र के शासक (टालेमी) और सेल्युकस तथा सेल्युकस के बेटे ने राजदूत भेजा था। चन्द्रगुप्त के ही दरबार में मेगास्थनीज आया था। अशोक के समय में तो भारत का विदेशों से सम्पर्क बहुत ही बढ़ गया। अशोक ने अपनी धर्म-विजय के सिलसिले में 5 विदेशी राजाओं का नाम लिया है। एशिया, यूरोप और अफ्रिका – तीनों महादेशों में अशोक का दूत पहुँचे थे। भारत से बाहर जाकर भारतीय बसने लगे और वे अपने साथ भारतीय सभ्यता और संस्कृति को भी लेते गये। विदेशों से व्यापार में भी बहुत बृद्धि हुई। भारत में विदेशों से विद्यार्थी पढ़ने के लिए आने लगे। उस समय तक्षशिला में एक विश्व-विद्यालय था और वहाँ कई विदेशी विद्यार्थी पढ़ते थे। मौर्य काल के बाद भी विदेशी पढ़ने के लिए यहाँ आते रहे।

भारत में बौद्ध-धर्म के प्रचार से लोगों का रहन-सहन बदलने लगा। पहले पशुओं का खूब बलिदान होता था और लोग माँस खूब खाते थे। मद्य (शराब)

1–डा० रामवृक्ष सिह, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, इलाहाबाद, 1982, पृ०–134।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पान भी खूब होता था। ब्राह्मण कहलाने वाले लोग भी ये काम करते थे। किन्तु अब मांस-भक्षण और मद्यपान में लोगों की रुचि घटने लगी। पशुओं की हत्या कम होने लगी। लोग लड़ाई से भी मुँह मोड़ने लगे। बुरे और भद्दे खेल-तमाशे भी बन्द होने लगे। अशोक ने आदेश दिया था कि "यहाँ (उसके राज्य में) किसी जीव का बलिदान नहीं किया जाय और न कोई ऐसा उत्सव मनाया जाय जिसमें जीव का बलिदान होता है। जिस उत्सव में कोई जीव नहीं मारा जाता है, उसी को राजा अशोक पसन्द करता है। पहले राजा के ही रसोई-घर के लिए प्रतिदिन हजारों जीव मारे जाते थे पर अब (जब यह आदेश लिखा गया) केवल तीन जीव (दो मोर और एक हरिण) मारे जाते हैं। इनमें से हरिण भी रोज-रोज नहीं मारा जाता है। ये तीन जीव भी भविष्य में नहीं मारे जायेंगे।"

डा. भंडारकर के मतानुसार सम्पूर्ण देश में बौद्ध-धर्म के प्रचार का एक परिणाम यह हुआ कि साम्राज्य के विभिन्न प्रान्तों का आपसी मेल-जोल बहुत बढ़ गया। इससे पूरे भारत में एक सामान्य भाषा की आवश्यकता समझी जाने लगी। अतः पाली भी धार्मिक तथा साहित्यिक विचारों को लिपिबद्ध करने के लिए देश-व्यापी साधन बन गई।[1]

डा. भंडारकर का कथन है कि इस काल में बौद्ध-धर्म को इतना महत्वपूर्ण स्थान मिल गया कि वास्तव में अन्य सभी धर्म पृष्ठ भूमि में चले गये। परन्तु इसका सबसे अधिक श्रेय तीसरी शताब्दी ई. पू. के बौद्ध सम्राट, चक्रवर्ती धर्मराज को मिलना चाहिए। के. जे. सौन्डर्स का मत है कि विश्व-इतिहास में सम्राट अशोक के धर्म-प्रचार के द्वारा सभ्यता के प्रचार का बड़ा ही महत्वपूर्ण कार्य किया गया क्योंकि इनलोगों ने ऐसे देशों में प्रवेश किया जो अधिकांशतः बर्बर और अंध-विश्वासी थे।

वास्तव में बिना किसी राजनीतिक और आर्थिक स्वार्थ के धर्म के प्रचार का यह पहला उदाहरण है। अभी तक विश्व के इतिहास में ऐसा दूसरा ज्वलन्त उदाहरण दृष्टि-गोचर नहीं होता है।[2]

भारत ने ही विश्व को शान्ति तथा विश्व-प्रेम की भावना दी है। यद्यपि गौतम बुद्ध प्रेम और अहिंसा के अवतार थे परन्तु शक्ति और विश्व प्रेम की भावना को सांस्कृतिक रूप देना अशोक का ही कार्य था।[3]

1–उद्धृत ए. सी.– अरोड़ा, एस. एल. सीकरी, भारतीय इतिहास का प्राचीन एवं सल्तनतकाल, जालन्धर, 1996, पृ०–290।

2–बी. एन. लुणिया, प्राचीन भारतीय संस्कृति, आगरा, 1990, पृ०–424।

3–आचार्य चतुरसेन, भारतीय इतिहास की एक झांकी, वाराणसी, 1961, पृ.-61

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अशोक का साम्राज्य

अशोक का साम्राज्य विशाल था। यह उत्तर-पश्चिम में हिन्दू-कुश तक फैला हुआ था। दक्षिणी अफगानिस्तान और सीमा प्रान्त उसके साम्राज्य के अंग थे। उत्तर में कश्मीर भी अशोक के ही अधीन था। नेपाल के कुछ भागों पर भी अशोक का आधिपत्य था। पश्चिम में समुद्र तक उसका राज्य फैला हुआ था। सौराष्ट्र (गुजरात) उसके साम्राज्य में सम्मिलित था। पूर्व में भी उसका राज्य समुद्र तक फैला हुआ था। सम्पूर्ण बंगाल उसके राज्य में शामिल था। दक्षिण में मद्रास और मैसूर उसके साम्राज्य के अंग थे। दक्षिण-पूर्व में कलिंग पर तो उसका अधिकार हो ही गया था।

अशोक का साम्राज्य

इस तरह अशोक का साम्राज्य उत्तर-पश्चिम में हिन्दूकुश व. अफगानिस्तान से पूर्व में बंगाल तक और उत्तर में हिमालय की तराई से दक्षिण में मैसूर के दक्षिण भाग (चितलद्रुग) तक फैला हुआ था।

अशोक का यह साम्राज्य विशाल था और उसका अपने साम्राज्य के प्रति

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गर्व भी उचित ही था। अशोक के पहले या फिर बाद में किसी भी सम्राट का साम्राज्य इतना विशाल नहीं था। उत्तर-पश्चिम में कुछ ऐसे भाग मौर्य साम्राज्य में शामिल थे जिन पर मुगलों या अंग्रेजों का भी अधिकार कायम नहीं हो सका था। सुदूर दक्षिण के भी कई राज्य अशोक के अधीन तो नही थे किन्तु उसके राजनैतिक प्रभाव में थे।

डा० रमाशंकर त्रिपाठी ने लिखा है—प्राचीन भारत का कोई सम्राट इतने विस्तृत भूखण्ड का स्वामी नहीं था। डा० रमेश चन्द्र मजुमदार ने लिखा है—भारत के इतिहास में किसी भी अन्य सम्राट का साम्राज्य इतना अधिक विस्तृत नहीं था यहाँ तक कि अकबर महान् का साम्राज्य भी इतना अधिक विस्तृत नहीं था। अशोक ने न केवल विशाल साम्राज्य की स्थापना ही की अपितु उसने विभिन्न प्रदेशों को एक राजनीतिक सूत्र में बाँध भी दिया। पेशावर से बंगाल तक और काश्मीर से मैसूर तक समस्त प्रदेशों में एक ही राज्यादेश लागू किया जाता था। इस प्रकार अशोक के साम्राज्य में वह राजनीतिक तथा सांस्कृतिक एकता स्थापित थी जो आधुनिक भारत का स्वप्न है।

यह तो अशोक के राजनैतिक साम्राज्य की सीमा थी। उसका धार्मिक साम्राज्य तो इससे भी अधिक विस्तृत था। वह दूर-दूर देशों में फैला हुआ था। उसके धार्मिक साम्राज्य की कोई भौगोलिक सीमा नहीं थी।

शासक के रूप में अशोक

अशोक बहुत बड़ा बिजेता ही नहीं था बल्कि बड़ा योग्य शासक भी था। शासक भी तो दुनिया में बहुत हुए हैं किन्तु अशोक शासक के नाते भी बड़ा निराला था। वह एक बेजोर शासक था। वह एक आदर्श सम्राट था।

अशोक के समय में साम्राज्य विशाल था। पाटलिपुत्र से ही एक व्यक्ति के द्वारा सारे साम्राज्य पर शासन करना सम्भव नहीं था। इसलिए सम्पूर्ण साम्राज्य को 5 भागों में बाँट दिया गया था। उनके नाम इस प्रकार हैं—

1. उत्तरापथ—इसकी राजधानी तक्षशिला में थी। इसमें गांधार, कम्बोज, कश्मीर, अफगानिस्तान और पंजाब सम्मिलित थे।

2. दक्षिणापथ—इसकी राजधानी सुवर्णगिरि में थी। इसमें विन्ध्याचल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर्वत के दक्षिण के भू-भाग—महाराष्ट्र आदि शामिल थे।

3 पश्चिम चक्र—इसकी राजधानी उज्जैन में थी। इसमें गुजरात, काठियावाड़, राजपूताना, मालवा आदि सम्मिलित थे।

4. कलिंग इसकी राजधानी तोसली में थी। यह अशोक का नया विजित प्रदेश था।

5 मध्य-देश इसकी राजधानी पाटलिपुत्र में थी। इसमें उत्तर-प्रदेश, बिहार और बंगाल शामिल थे।

प्रथम चार भागों में कुमार सूबेदार या उपराज के रूप में शासन करते थे। अमात्य या महामात्य उनकी सहायता करते थे। सम्राट की राजाज्ञा कुमार के पास भेजी जाती थी। लेकिन मध्य देश में कोई उपराज नहीं होता था। उसका शासन सीधे सम्राट के हाथ में रहता था।

इस तरह साम्राज्य सूबों में सूबा मंडलों में, मंडल जनपदों में और जनपद ग्रामों में विभाजित थे। राज्य की सबसे छोटी इकाई ग्राम था। ग्राम का अधिकारी ग्रामिक कहलाता था। जनपद के शासक को समाहर्त्ता और मंडल के शासक को महामात्र कहते थे। महामात्रों के ऊपर कुमार और उसके अमात्य होते थे।

पाटलिपुत्र में सम्राट रहता था। वह पाटलिपुत्र से ही साम्राज्य के सभी भागों पर ध्यान रखता था। उसकी सहायता करने के लिए एक मंत्रिपरिषद् होती थी। उसमें पुरोहित और प्रधान मन्त्री के पद प्रधान थे। कभी-कभी इन दोनों पदों पर एक ही व्यक्ति नियुक्त होता था। चाणक्य और राधागुप्त ने दोनों पदों के कार्य-भार को एक साथ संभाला था। केन्द्रीय सरकार के गुप्तचर भी होते थे। गुप्तचर को प्रतिवेदक (पटिवेदक) भी कहते थे।

गुप्तचर अमात्यों और अन्य अधिकारियों तथा कर्मचारियों पर नियंत्रण रखते थे। वे विदेशों में जासूस का भी काम करते थे। वे साधु-सन्यासी, व्यापारी-व्यवसायी, वैरागी-तपस्वी, छात्र-शिक्षक आदि की वेष-भूषा में घुमते-फिरते थे। उनकी भाषा सांकेतिक और लिपि गुप्त होती थी। इस तरह गुप्तचर अपने प्रतिवेदनों को सम्राट के पास समय-समय पर भेजा करते थे। वे सम्राट को प्रजा की भावनाओं सम्बन्धी सूचनाएँ भी देते रहते थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन्त्रियों के अधीन विभाग बँटे रहते थे। विभागों की कुल संख्या 18 थी। विभाग को तीर्थ कहते थे। प्रत्येक मंत्री अपने-अपने विभाग के लिए उत्तरदायी होता था।

पाटलिपुत्र का प्रबन्ध करने के लिए एक नगर-सभा थी। वह 6 समितियों में बँटी थी। उन समितियों के अधीन काम बँटे हुए थे। शासन प्रबन्ध बहुत ही अच्छा था।

राज्य की आय के कई साधन थे। व्यवसाय पर कर लगाता था। आयात-निर्यात पर कर देना पड़ता था। किसान अपनी उपज का एक-चौथाई भाग कर के रूप में देते थे। खनिज वस्तुओं पर राज्य का नियंत्रण था। व्यय के कई मद होते थे।

सैनिकों और पदाधिकारियों को उचित वेतन मिलता था। यदि सेवा-काल में किसी कर्मचारी की मृत्यु हो जाती थी तो उसके पुत्र या उसकी पत्नी को कुछ निश्चित रकम देने की व्यवस्था थी।

न्याय के लिए न्यायालय होते थे। ग्रामों में ग्राम-पंचायत छोटे-मोटे झगड़ों का फैसला करती थी। पाटलिपुत्र में दीवानी और फौजदारी अदालतें थीं। सम्राट सबसे बड़ा न्यायाधीश थे। उनका निर्णय अन्तिम माना जाता था।

शिक्षा की समुचित व्यवस्था थी। राज्य की देख-रेख में राजकीय विद्यालय होते थे। इन विद्यालयों के शिक्षकों को राज्य की ओर से वेतन मिलता था। दूसरे विद्यालयों को राज्य की ओर से अनुदान मिलता था।

अशोक को विरासत में एक सुसंगठित शासन व्यवस्था प्राप्त हुई थी। चन्द्रगुप्त द्वारा स्थापित शासन व्यवस्था में प्रजा के हित का पूरा ख्याल रखा जाता था। अशोक तो अपनी प्रजा को अपनी संतान ही समझता था। वह अपनी प्रजा के भौतिक और पारलौकिक सुख के लिए सदा प्रयत्नशील रहता था।

राज्य में अधिकारियों की संख्या बहुत थी फिर भी अशोक ने कुछ नवीन अधिकारियों की नियुक्ति की। ये नये अधिकारी थे—

महामात्र महामात्र तीन प्रकार के थे। धर्म-महामात्र, स्त्री महामात्र और अन्त महामात्र। धर्म महामात्र का प्रमुख कार्य था राज्य में धर्म का प्रचार करना,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उचित न्याय करना, दान की व्यवस्था करना। स्त्री महामात्र स्त्रियों के सम्बन्ध में कार्य करती थी। अन्त महामात्र सीमाँत प्रदेशों पर अशोक की नीति का प्रचार करने के लिए नियुक्त थे।

दूसरा प्रसिद्ध अधिकारी राजुक था। राजुक प्रजा के हित में धाय के समान कार्य करता था। प्रदेशिक प्रान्त में गवर्नर के नीचे प्रमुख अधिकारी था। युक्त आर्थिक व्यवस्था की देख-रेख करता था।

कुछ अन्य अधिकारियों का भी विवरण मिलता है।

न्याय – न्याय के क्षेत्र में विसंगतियों को दूर करने का प्रयास किया गया। राज्य भर में एक समान कानून लागू करने पर जोर दिया गया। निर्दोष व्यक्ति के साथ अन्याय और अत्याचार होने पर अधिकारियों कों दण्डित किया जाता था। जेल में बृद्धों और अधिक सन्तान वालों के साथ कुछ अधिक सहानुभूति दिखाई जाती थी।

पेशा और खान-पान

कृषि प्रमुख पेशा था। हल-बैल के द्वारा खेत जोते जाते थे। कई फसलें पैदा होती थो। फल भी पैदा होते थे। विभिन्न साधनों के द्वारा सिंचाई होती थी।

विविध व्यवसाय होते थे। ऊनी एवं सूती कपड़े बनते थे। स्वर्णकार आभूषण बनाते थे। नमक भी बनता था। ठेकेदारी के भी काम होते थे।

व्यापार भी होता था। बाजारों में दैनिक उपयोग की वस्तुए मिलती थीं। मुनाफा की सीमा राज्य की ओर से निर्धारित थी। मिलावट दंडनीय अपराध माना जाता था। व्यापार जल और स्थल दोनों मार्गों से होता था। नदियों और नहरों में नावें चलती थी।

साम्राज्य में सड़कों की भरमार थी। चारों दिशाओं से पाटलिपुत्र में सड़कें आकर मिलती थी। दूरी बताने के लिए सड़कों पर पत्थर गड़े होते थे। चौराहों पर भी संकेत-चिह्न लगाये जाते थे। राज्य की ओर से सड़कों तथा मार्गों पर निगरानी रखी जाती थी।

सिक्के का व्यवहार होता था। एक प्रकार के सिक्के को पण कहते थे। सिक्के की व्यवस्था के लिए एक अधिकारी होता था। टकसाल का भी एक प्रबंधक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होता था।

लोग मांसाहारी और शाकाहारी दोनों प्रकार के थे। धीरे-धीरे मांस-भक्षण कम होने लगा था। मनोरंजन के भी कई साधन थे। गन्दे और हिंसात्मक खेल तमाशों पर प्रतिबन्ध लगने लगा था।

उन दिनों अपराधों की संख्या बहुत सीमित थी। लोगों के आचरण अच्छे होते थे। वे विधि-विधानों का पालन करते थे। नैतिक नियमों की प्रधानता थी। समाज में चोरी का तो नाम-निशान नहीं था। लोगों में भाईचारे का सम्बन्ध अधिक था।

अशोक की विशेषताएँ

तुलसीदास जी कहते हैं कि "प्रभुता पाई केहि मद न पावा" यानी प्रभुता पाकर कोई भी अहंकारी बन जाता है। एक और विचारक का कथन है कि सत्ता (शक्ति तो प्रत्येक व्यक्ति को भ्रष्ट कर देती है और असीमित सत्ता वाला व्यक्ति तो पूर्ण रूप से भ्रष्ट हो जाता है। किन्तु अशोक में अहंकार नहीं था। वह भ्रष्टाचार से बिल्कुल मुक्त था। वह तो न्याय और नम्रता की मूर्ति था। वह राजा था किन्तु उसका रहन-सहन बड़ा ही सादा था। वह स्वामी था किन्तु सेवा करना ही उसका आदर्श था। उसमें शक्ति थी किन्तु संयम भी था। वह किसी को सताने में अपनी शक्ति का दुरुपयोग नहीं करता था।

तुलसीदास ने यह भी कहा है कि—'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' यानी बहुत से लोग दूसरों को उपदेश देने में बड़ा चतुर होते हैं किन्तु अपने ही उन उपदेशों का पालन नहीं करते हैं। यह बात आजकल तो और भी अधिक देखने में आती है। किन्तु इस दृष्टि से भी अशोक भिन्न था। वह दूसरों को जो उपदेश देता था उसे वह स्वयं भी पालन करता था। उसकी कथनी और करनी में, उसके सिद्धान्त और व्यवहार में कोई अन्तर नहीं था। यही तो सच्चाई है—ईमानदारी है। "हाथ सुमिरनी, बगल कतरनी" वाली कहावत उसके साथ बिल्कुल ही लागू नहीं होती है। 'उपदेश से उदाहरण ही उत्तम है' इसी सिद्धान्त में अशोक का गहरा विश्वास था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अशोक का उद्देश्य--सबकी सच्ची सेवा

अशोक के जीवन का एक ही उद्देश्य था - वह था सेवा करना। किसकी सेवा ? अपनी प्रजा की सेवा करना। केवल अपनी प्रजा की ही नहीं बल्कि सभी मानव की सेवा करना उद्देश्य था चाहे वह मानव कोई भी हो और कहीं का भी हो। सभी मानव की ही नहीं बल्कि सभी प्राणी-मात्र की सेवा करना उसका उद्देश्य था चाहे वह प्राणी मनुष्य हो या पशु हो या पक्षी हो या अन्य कोई जीव-जन्तु हो या कीड़ा-मकोरा हो। इस तरह सारी धरती पर उसका घर था। इस धरती पर बसने वाला मानव समाज ही उसका परिवार था। प्रत्येक जीबधारी से वह प्रेम करता था। 'बसुधैव कुटुम्ब्रमम्' यानी पृथ्वी पर सभी रहने वाले एक ही परिवार के हैं - इसका मुँह से उच्चारण तो बहुतों ने किया किन्तु वैसा आचरण शायद ही किसी ने किया है। अशोक ने इसका उच्चारण भी किया और वैसा ही आचरण भी किया।

आज भारत लोक-कल्याणकारी राज्य है। ऐसे राज्य में प्रजा के हित के लिए सरकार कोशिश करती है। आज से 2250 वर्ष पहले अशोक का राज्य भी लोक-कल्याणकारी राज्य था। अशोक के लिए अपनी सन्तान और अपनी प्रजा में कोई अन्तर नहीं था। उसने घोषणा की थी कि "सभी प्रजा मेरी संतान है। जैसे मैं अपनी संतान के लिए भौतिक (सांसारिक) और पारलौकिक (स्वर्गीय) सुख की कामना करता हूँ वैसे ही मैं अपनी प्रजा के लिए भी दोनों सुख चाहता हूँ।" (कलिंग-शिलालेख)

अशोक ने अपनी प्रजा की सुख-सुविधा के लिए पुरानी सड़कों की मरम्मत करायी और नयी सड़कों का भी निर्माण कराया। सड़कों के दोनों बगल पेड़-पौधे लगाये गये जिनसे लोगों को छाया मिल सके। कितने पेड़-पौधे फल भी देने वाले थे। पानी पीने के लिए कुँए खुदवाये गये। ठहरने के लिए कुछ-कुछ दूरी पर सराय बनवाये गये। खेती की सुविधा के लिए नहरों का प्रबन्ध किया गया। विद्या के प्रचार के लिए अनेक विद्यालय खोले गये।

धर्म-महामात्र और राजुक

अशोक ने लोगों को धार्मिक और नैतिक उन्नति के लिए प्रयत्न किया। एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धार्मिक विभाग ही कायम किया गया। धर्म महामात्र नामक अफसरों की बहाली हुई। इनका मुख्य काम था जनता के आचरण को उन्नत बनाना। वे सब तरह के लोगों के बीच में जाकर उपदेश कर सकते थे। वे राज-परिवार के बीच भी भाषण कर सकते थे। धर्म-लेख में लिखा गया है कि वे सभी धार्मिक सम्प्रदायों के लिए बहाल हुए हैं। वे धर्म की रक्षा, उसकी वृद्धि और धार्मिक लोगों के सुख और हित के लिए बहाल किये गये हैं। वे स्वामियों और सेवकों, ब्राह्मणों और धनवानों, अनाथों और बूढ़ों के सुख और हित के लिए नियुक्त किये गये हैं। इन्हें बहुत अधिकार दिये गये थे। वे पिछड़े हुए लोगों के विकास पर विशेष ध्यान रखते थे।

स्त्रियों में सुधार लाने के लिए अशोक ने स्त्री-महामात्र की भी बहाली की थी।

अशोक ने एक और मुख्य अफसर को बहाल किया था। वह राजुक कहलाता था। आजकल के जिलाधीश (कलक्टर) की तरह उसका पद बड़ा ऊँचा था। वह लगान वसूल करता था और न्याय भी करता था। वह भूमि सम्बन्धी झगड़े का फैसला करता था। वह प्रजा के नैतिक तथा धार्मिक सुधारों के लिए भी उत्तरदायी था। उसे सम्राट की ओर से कोई भय नहीं था। वह अपने कर्त्तव्य का पालन निर्भयतापूर्वक करता। अशोक राजुक पर बड़ा भरोसा रखता था। वह कहता था कि—"जैसे कोई आदमी अपने बाल-बच्चे को किसी चतुर धाय को सौंप कर निश्चिन्त हो जाता है यह सोचकर कि वह उन बाल-बच्चों का अच्छी तरह पालन-पोषण करेगी, वैसे ही मैंने राजुक के ऊपर प्रजा को सुख और आराम देने का भार सौंप दिया है।" (चौथा स्तम्भ लेख)। अशोक ने उन्हें आज्ञा दी थी कि वे अपने क्षेत्रों में घूम-घूम कर प्रजा की भलाई किया करें। राजुक को पूरा अधिकार दिया गया। वे किसी को अच्छे काम के लिए इनाम दे सकते थे। जज के नाते उनका यह देखना काम था कि गरीबी के कारण किसी के साथ कोई अन्याय तो नहीं होता था। वह दंड और कानून में समता कायम रखने के लिए कोशिश करता था।

धर्म महामात्र और राजुक के अतिरिक्त भी कई अन्य प्रमुख पदाधिकारी थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वे हर तीसरे या पाँचवें वर्ष साम्राज्य के विभिन्न भागों में दौरा करते थे और जनता के निकट सम्पर्क में आकर उसकी कठिनाइयों तथा शिकायतों को सुनते और समझते थे। वे उन्हें सुन और समझकर दूर करने का भी हर तरह से प्रयत्न करते थे।

अशोक का दायित्व

अशोक अपनी प्रजा के लिए खुद ही बराबर परिश्रम करता था। वह अपनी प्रजा के हित को सबसे ऊपर समझता था। प्रजा के लिए उसका दरवाजा बराबर खुला रहता था। उसने अपने कर्मचारियों को यह आदेश दे रखा था कि "मैं जहाँ भी रहूँ, भोजन करता रहूँ, अन्तःपुर (परिवार के बीच) में रहूँ या सोने के घर में रहूँ या बगीचे में रहूँ, सब समय मुझे प्रजा के काम के सम्बन्ध में सूचना मिलती रहनी चाहिए।" अपनी प्रजा के काम के लिए वह सब समय और सभी जगह तैयार रहता था। वह अपने साम्राज्य में स्वयं दौड़ा किया करता था और अफसरों के कामों तथा व्यवहारों पर खूब ध्यान रखता था।

प्रो. के. ए. नीलकण्ठ शास्त्री के मतानुसार भी सम्राट ने स्वयं तथा उसके कर्मचारियों ने प्रजा की भलाई के लिए लगातार एवं अथक कार्य करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी।[1] डा. एच. सी. राय चौधरी का भी मत है कि वह अपने उत्साह में सुदृढ़ और अपने प्रयासों में अथक था। उसने अपनी सारी शक्ति अपनी प्रजा की आध्यात्मिक तथा भौतिक उन्नति में लगा दी जिसे वह अपनी सन्तान-सदृश समझता था।

डा. आर. एस. त्रिपाठी का भी कथन है उसको अपने कर्त्तव्य का गहरा ध्यान रहता था, जिस कारण उसने अपने पद और स्थान से सम्बन्धित सुख तक को त्याग दिया था। हर घड़ी व हर स्थान पर शासन का कार्य और प्रजा के कल्याण सम्पन्न करने को वह तत्पर रहता था। अपने साम्राज्य के समस्त साधन उसने मनुष्य मात्र के दुःखमोचन व अपने धम्म के प्रचार के लिए लगा दिये।[2]

1–एज ऑफ नन्दाज एवं मौर्याज, पृ.–228।
2–एंशियंट इंडिया, पृ.–178।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपराधियों के साथ उदारता

अशोक के पहले अपराधियों को बड़ा कठोर दंड दिया जाता था। अशोक ने दंड के नियम को उदार बनाया। उसने कुछ अच्छा सुधार किया। धर्म महामात्रों और राजुकों को उसने अधिकार दिया कि वे जिन कैदियों के आचरण में सुधार देखें उनकी सजा के समय को घटा दें या उन्हें कैद से छोड़ दें। जिन अपराधियों को फाँसी दी जानी थी उन्हें 3 दिन का और अधिक समय दिया गया। वे 3 दिन के अन्दर अपनी जान बचाने के लिए कोशिश करें या दान-पुण्य के द्वारा या सगे-सम्बन्धियों से भेंट कर अपनी आत्मा को शान्त और सन्तुष्ट कर लें। अशोक ने अपने अफसरों को आदेश दिया था कि कमजोरों के हाथ में हथकड़ी (जंजीर) नहीं लगानी चाहिये, बूढ़ों को जेल से रिहा कर देना चाहिये और कैदियों के परिवारों के भरण-पोषण के लिए प्रबन्ध करना चाहिये।

परमार्थ के अन्य काम

अशोक ने दीन-दुखियों के लिए अनाथालय खोले जहाँ गरीबों को कपड़ा, भोजन आदि मुफ्त देने का प्रबन्ध था। गरीब विद्यार्थियों को भी बहुत सहायता दी जाती थी। उसने मनुष्यों के लिए भी चिकित्सालय (अस्पताल, खोला। उसने पशु-पक्षियों और जीव-जन्तुओं के हित के लिए भी अस्पताल कायम किया। इस ख्याल से भी वह आधुनिक युग से भी आगे था। संसार के इतिहास में अस्पताल खोलने और चलानेवाला वह पहला आदमी था। उन अस्पतालों में बहुत ही योग्य चिकित्सक (डाक्टर) बहाल किये जाते थे। वहाँ मुफ्त दवा देने की व्यवस्था थी। उसने दवा के लिए जड़ी-बूटियों का बगीचा तैयार कराया। उसमें जहाँ-तहाँ से जड़ी-बूटियों को मंगाकर लगाया जाता था। अशोक के बनवाये अस्पतालों के चिह्न अभी भी कहीं-कहीं देखने को मिलते हैं। एक लेखक का कहना है कि सूरत का जो प्रसिद्ध जानवर अस्पताल है वह अशोक का ही बनवाया हुआ है।

अशोक ने पशुओं के उपकार के लिए तीन प्रकार के कार्य किये। मनुष्य द्वारा की जानेवाली पशु हत्या तथा पशुओं पर अन्य अत्याचार उत्पीड़न समाप्त किये गये। पशुओं के रोग निवारण के लिए उपाय किये गये। पशुओं की सुख-समृद्धि के लिए कार्य किये गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस तरह अशोक का पशु-प्रेम भी अद्‌भुत था। उसने पशु-धन के महत्व को समझा, उसकी रक्षा करते हुए उसमें वृद्धि भी की।

डा० भण्डारकर ने लिखा है—उसका आदर्श केवल अपने ही राज्य में नहीं बल्कि समस्त ज्ञात विश्व में मनुष्यों, पशुओं तथा अन्य जीव-जन्तुओं के भौतिक एवं आध्यात्मिक कल्याण के लिए कार्य करना था।[1]

अशोक का विचित्र साहस

अशोक बड़ा निडर था। उसे किसी से कोई भय नहीं था। उसने एक ऐसी घोषणा की थी जैसी घोषणा संसार के इतिहास में दूसरे किसी राजा ने अब तक नहीं की है। उसने घोषित किया था कि 'यदि सम्राटको कोई हानि भी पहुँचायेगा तो वह उसे भी जहाँ तक सम्भव होगा धैर्य के साथ सहन करेगा।" उसने आगे कहा था कि—"मेरे राज्य में भी बनवासी हैं, उनके ऊपर भी मेरी कृपा दृष्टि है। मैं चाहता हूँ कि वे भी अच्छे ढंग से सोचें-विचारें। यदि वे ऐसा नहीं करेंगे तो मुझे बड़ा दुःख होगा। मैं चाहता हूँ कि सभी जीवों में सुरक्षा, शान्ति, आत्मसंयम और और आनन्द हो।"

अशोक ने अपने पड़ोसी और विदेशी राज्यों के साथ भी प्रेम और मित्रता का सम्बन्ध रखा। उसने इन सभी राज्यों के प्रति भी अपनी नीति की घोषणा की। उसने कहा था कि "ये सभी जातियाँ मुझसे न डरें। वे मुझपर विश्वास करें और मुझसे सुख पावें। वे विश्वास रखें कि जहाँ तक संभव होगा राजा (अशोक) उनके साथ क्षमा का ही व्यवहार करेगा।" जो सीमांत प्रदेश में रहने वाली जातियां नहीं जीती गयी हैं वे मुझसे कभी दुःख न पावें। अब तक किसी राजा या शासक में इतनी हिम्मत नहीं हुई है कि अशोक के समान घोषणा करे।

कोई गैर नहीं—सभी अपने

अशोक सर्वोदयवादी था यानी इतिहास में वह पहला सम्राट था जो सब का सब तरह से कल्याण चाहता था। वह अपनी प्रजा के लिए जो काम करता था दूसरे देश की प्रजा के लिए भी वह उन कामों को करता था। उसके लिए तो अब किसी के साथ कोई भेद-भाव नहीं रह गया था। अब तो सारा मानव समाज ही

1—अशोक पृ०-203।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसका परिवार था। वह अपनी सन्तान की तरह सभी लोगों के लिए लौकिक (इस जिन्दगी में) और परलौकिक (मरने के बाद) दोनों प्रकार के सुखों की कामना करता था।

अशोक लोगों की सुख-सुविधा के लिए बड़ा कड़ा परिश्रम करता था फिर भी उसे संतोष नहीं होता था। वह इतना परिश्रम नाम या दाम, पुरस्कार या प्रतिष्ठा के लिए नहीं करता था। काम उसे प्यारा था। जनता उसे प्यारी थी। वह आराम करना हराम (पाप) समझता था। वह परिश्रम और सेवा करना अपना पवित्र कर्त्तव्य मानता था। वह कहा करता था कि इस तरह वह जनता के ऋण कर्ज) से मुक्त हो सकेगा। उसके मत में सर्वलोकहित से बढ़कर दूसरा कोई कर्त्तव्य नहीं था।

संत तुलसीदास ने सोलहवीं शताब्दी में रामचरित मानस में लिखा है—पर-हित सरिस धर्म नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं अध भाई। दूसरे की भलाई करने के समान अन्य कोई धर्म नहीं है और दूसरे को कष्ट देने के समान अन्य कोई दुष्कर्म नहीं है। अशोक ने अपने समय में तुलसीदास के इन सिद्धान्तों का समर्थन किया और इन्हें व्यवहारिक रूप भी दिया।

'शास्त्रों' ने जिन राजगुणों का सिद्धान्तः निरुपण किया था, अशोक ने उनका आचरणतः प्रयोग किया। अकबर की मेधा, जहाँगीर के न्याय और फ्रेडरिक महान् (प्रशा) के अध्यवसाय वाला यह सम्राट अपने आचरण में निःसंदेह प्रजा का सेवक था।[1]

अशोक निर्माता के रूप में

अशोक केवल विजेता और शासक हो नहीं था बल्कि वह निर्माता भी था। निर्माता के कामों में भी उसे बड़ा सुख मिलता था। अशोक ने नेपाल में एक नगर बसाया था जिसका नाम ललितपाटन है। भारत के उत्तर-पश्चिम के कोने पर काश्मीर है। काश्मीर अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के लिए प्रसिद्ध है। इसकी सुन्दरता को देख कर देश-विदेश के लोग दंग रह जाते हैं। काश्मीर की राजधानी श्रीनगर है। अशोक ने ही श्रीनगर को भी बसाया था।

1—डा० भगवत शरण उपाध्याय, प्राचीन भारत, पटना, 1973, पृ०-200।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अशोक ने बहुत से मठों और बिहारों को कायम किया। इन मठों और बिहारों में भिक्षु (पुरुष) और भिक्षुणी (स्त्री) रहते थे। एक भाग में इतने विहार बने कि एक राज्य का नाम ही बिहार पड़ गया। यह नाम आज भी जारी है। इसी राज्य के अन्दर पाटलिपुत्र में अशोक की राजधानी थी। पाटलिपुत्र को ही आजकल पटना कहते हैं।

अशोक ने बहुत से स्तूपों को बनवाया। स्तूप अंडे के आकार का होता था। इसके अंदर बौद्धों की अस्थि (हड्डी) रखी जाती थी। कुछ लोग कहते हैं कि अशोक

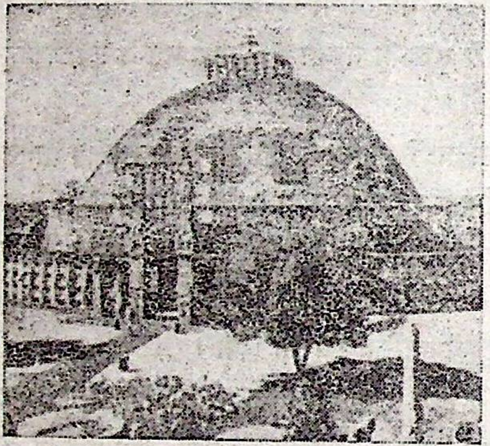

साँची का स्तूप

ने चौरासी हजार स्तूप बनवाया था। संख्या जो भी हो, इतना ठीक है कि उसने बहुत स्तूपों को बनवाया था। भोपाल के पास साँची स्तूप के लिए ही प्रसिद्ध है।

अशोक के समय में पत्थर काटने, खम्भा और मकान बनाने की कला में बड़ी उन्नति हुई। अशोक की राजधानी पाटलिपुत्र सुन्दर-सुन्दर भवनों से भरा हुआ था। अशोक का राजमहल बड़ा ही सुन्दर और मजबूत बना था। आज से करीब 15 सौ वर्ष पहले चीन से एक यात्री भारत घूमने-फिरने आया था। उसका नाम था फाहियान। वह तो अशोक के राजमहल को देखकर अचरज करने लगा। वह कहने लगा कि अकेले मनुष्य ने ही इसे (महल) नहीं बनाया होगा। इस महल के बनाने में देवताओं का भी सहयोग रहा होगा। पटना के पास कुम्हरार की खुदाई में अशोक के महल के चिह्न पाये गये हैं। उसमें पत्थरों के बने हुए कई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खम्भे लगे थे। ये खम्भे गोल, मोटे और चिकने थे। ये नीचे अधिक और ऊपर कम मोटे थे। अचरज की बात है कि पत्थर के इन खम्भों में कहीं जोड़ नहीं दिखायी पड़ता है। इसमें लकड़ी के जो शहतीर लगे थे वे दो हजार वर्ष बाद भी अच्छी दशा में पाये गये हैं। लकड़ी के टुकड़ों को इस बारीकी से मिलाया जाता था कि उनमें जोड़ का कहीं पता नहीं चलता था। डाक्टर स्पूनर की देख-रेख में सबसे पहले कुम्हरार में खुदाई शुरू हुई थी। पत्थर के चमकीले खम्भों और लकड़ी के सुरक्षित शहतीरों को देखकर डा० स्पूनर को बड़ा आश्चर्य हुआ था। पत्थर और लकड़ी के काम करने वाले कारीगर बड़े ही चतुर थे। महल में तीन मंजिलें थीं। महल के चारो ओर एक उद्यान था। उद्यान में विविध प्रकार के पेड़-पौधे थे। कई प्रकार की फूल-पत्तियाँ भी थीं। खम्भों पर सुन्दर हरी लताएँ फैली हुई थीं।

राजमहल के हाते में तालाब भी था। तालाब में सुन्दर मछलियाँ थीं। नगर की सुरक्षा के लिए चहारदीवारी बनी थी।

उपदेशों को खुदवाना

अशोक ने मकान बनाने में तो पत्थर का व्यवहार किया ही, एक और काम के लिए भी उसने पत्थर का व्यवहार किया। अपने उपदेशों को लिखने के लिए भी उसने पत्थर को काम में लाया। उस समय आजकल की तरह कागज तो था नहीं। कागज पर लिखी हुई चीजें बहुत दिनों तक टिक भी नहीं सकती है। अतः पत्थर के स्तम्भ बनाकर उन पर धर्म के उपदेश खोद दिये गये। ये स्तम्भ भारत के कई भागों में आज भी पाये जाते हैं।

सुन्दर और भारी स्तम्भ का निर्माण

चुनार के पत्थरों से स्तम्भ बनाये गये। एक-एक स्तम्भ बहुत बड़ा और बहुत भारी है। यह 40 से 50 फुट तक ऊँचा है और 1200 मन या 50 टन से अधिक ही भारी है। स्तम्भ में कहीं कोई जोड़ भी नहीं मालूम पड़ता है। स्तम्भ नीचे की ओर बहुत मोटा है और ऊपर की ओर पतला होता चला गया है। यह चिकना भी बहुत है। आज भी पहले जैसा चमकता है मानो नया ही बना हुआ है। स्तम्भ में जिस पालिश का उपयोग हुआ है वह अद्‌भुत है। उसमें अजीब

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चमक है और वह आज भी ताजी जैसी है। वैसी पालिश फिर बाद में किसी वास्तुकला में दिखायी नहीं पड़ती। ऐसा स्तम्भ कैसे बना, कैसे एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाया गया और फिर कैसे खड़ा किया गया—ये सभी बातें सोचकर आज भी लोग अचरज करते हैं।

इसके सम्बन्ध में एक बड़ी ही रोचक कहानी है। आज से करीब 6 सौ वर्ष पहले की बात है। दिल्ली में फिरोज शाह का राज्य था। दिल्ली से 12 मील की दूरी पर एक स्तम्भ था। उस स्तम्भ को दिल्ली लाना था। अतः एक गाड़ी तैयार हुई जिसमें 42 पहिये थे। एक-एक पहिया में दो सौ आदमी लगे। इस तरह कुल चौरासी सौ आदमी गाड़ी में लगे। स्तम्भ को रूई घास आदि में लपेट कर गाड़ी पर रखा गया। इस तरह वह स्तम्भ दिल्ली पहुँचाया गया। 12 मील की दूरी तय करने में तो इतनी परेशानी हुई, सो भी मैदान में, जंगल या पहाड़ी इलाकों में नहीं। अब अशोक के समय में इससे अधिक दूर-दूर और नदी, जंगल पहाड़ के इलाकों से होते हुए एक जगह से दूसरी जगह स्तम्भ कैसे गया है – कल पुर्जे के काम करने वाले लोग अभी भी समझ नहीं पाते हैं।

सुन्दर मूर्तियों का निर्माण

स्तम्भ के माथे पर मूर्तियाँ भी बनी हुई हैं। ये मूर्तियाँ पशुओं और जानवरों

सारनाथ स्तम्भ का ऊपरी भाग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की हैं। इन मूर्तियों में विचित्र पालिश लगी है। देखने पर मालूम पड़ता है कि सचमुच स्तम्भ के ऊपर जीवित जानवर खड़े हैं। वे इतने सुन्दर ढंग से बने हुए हैं।

बनारस के पास सारनाथ में भी एक स्तम्भ पाया गया है। इस स्तम्भ का माथा (शीर्ष) बड़ा ही सुन्दर है। इसके माथे पर चार सिंह की मूर्तियाँ बनी हुई हैं। उनके मुँह चार दिशाओं की ओर हैं। ये देखने में बड़े ही मनोरम हैं। कला के इतिहास में ये मूर्तियाँ बेजोर हैं। इनके नीचे एक चक्र पाया जाता है। चक्र के दोनों ओर भी जानवरों की मूर्तियाँ हैं। दुनिया में शिल्प-कला का ऐसा नमूना और कही नहीं है। डा० स्मिथ और सरजॉन मारशल नामक अंग्रेज लेखकों ने इन मूर्तियों की बड़ी प्रशंसा की है।

ये स्तम्भ भारत के कई स्थानों में पाये गये हैं। बिहार में चम्पारण जिले में तीन स्थानों पर ये स्तम्भ देखे जाते हैं लौरिया अरेराज, लौरिया नन्दनगढ़ और रामपुरवा। महात्मा महाबीर की जन्म-भूमि वैशाली के पास कोल्हुआ गाँव में भी एक स्तम्भ है। इसके मस्तक पर एक सिंह की मूर्ति भी है।

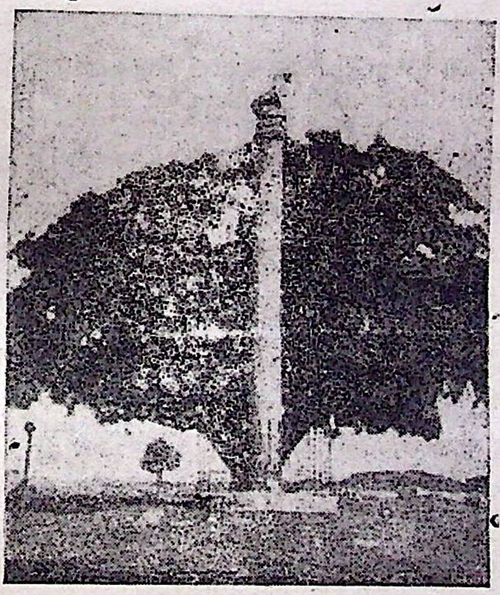

अशोक का स्तम्भ

अशोक के धर्म-लेख केवल स्तम्भों पर ही नहीं लिखे गये। वे चट्टानों और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुफाओं में भी लिखे गये। चट्टानों और गुफाओं के आस-पास भी मनुष्यों का आना-जाना होता था। कितने साधु-महात्मा तो इन्हीं जगहों में रहते आये हैं। बिहार राज्य में गया जिला में बराबर नाम की पहाड़ी है। उस पहाड़ी में अशोक ने साधुओं के लिए 4 गुफाएँ बनवा दी थीं। इन गुफाओं की दीवारों में भी खूब चमक और चिकनाहट है। वे आइने की तरह साफ-सुथरे हैं। 3 गुफाएँ नागार्जुन पर्वत में स्थित हैं।

अशोक पहला भारतीय शासक था जिसने भारतीय कला के इतिहास को क्रमिक स्वरूप प्रदान किया तथा कला के प्रति मानों को स्थायी आकार दिया।[1] डा. वी. ए. स्मिथ के मतानुसार पत्थर काटने वालों की कला चरम कोटि तक पहुँच गई थी और उन्होंने ऐसी कृतियाँ बनायी जो शायद बीसवीं शताब्दी की शक्तियों के बाहर हैं।[2]

अभि लेख के ८ भाग

अशोक के अभि-लेखों को विद्वानों ने आठ भागों में बाँटा है। (1) दो छोटे शिला (पत्थर) लेख—ये लेख बिहार राज्य में शाहाबाद जिले के अन्दर सासाराम में और जबलपुर जिले में (रूपनाथ), जयपुर के पास बराठ में और पुराने निजाम राज्य के मस्की गाँव में पाये गये हैं। ये लेख 12 स्थानों में प्राप्त हुए हैं। (2) भब्रू शिला-लेख – भब्रू जयपुर राज्य के बैराठ नामक स्थान के पास ही है। (3) चौदह शिला-लेख—ये पेशावर, देहरादून, गुजरात के आस-पास मिलते हैं। ये आठ स्थानों में मिले हैं। (4) दो कलिंग शिला-लेख – उड़ीसा राज्य के अन्दर मिले हैं। (5) तीन गुहा लेख—गया के पास बराबर की पहाड़ियों में पाये जाते हैं। (6) दो तराई स्तंभ लेख—नेपाल की तराई में पाये गये हैं। (7) सात स्तंभ लेख—दिल्ली और इलाहाबाद के पास तथा बिहार राज्य में चम्पारण जिले में पाये गये हैं। (8) तीन छोटा स्तंभ लेख—भोपाल के अन्दर साँची में, बनारस के पास सारनाथ में और इलाहाबाद के पास कशोम्बी में पाये गये हैं।

कलिंग के दो अभि-लेख चौदह शिला-लेख के पूरक हैं और सात स्तंभ-लेख चौदह शिला-लेखों के उप-संहार हैं।

1–सिन्हा तथा सहाय, प्राचीन भारत का इतिहास, वाराणसी, 1966, पृ.-168

2–दिहिस्ट्री ऑफ आर्यन रूलइन इण्डिया, पृ०-100

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनभाषा का प्रयोग

उस प्राचीन काल में संस्कृत भाषा की बड़ी महत्ता थी किन्तु संस्कृत विद्वानों की भाषा थी, आम जनता की नहीं। अतः अशोक ने जनता तक पहुँचने के लिए बोल-चाल की भाषा को ही अपने काम में लाया। जन-साधारण पाली भाषा और ब्राह्मी लिपि को अच्छी तरह समझते थे। अतः अशोक ने पाली-भाषा और ब्राह्मी लिपि में ही अपने अभि-लेखों को खुदवाया। इसी ब्राह्मी लिपि से तो आधुनिक काल की देवनागरी लिपि पैदा हुई है। आज भारत की अधिकांश जनता देवनागरी लिपि को अच्छी तरह समझती है। लेकिन अशोक के समय में भी भारत के उत्तर-पश्चिम में पेशावर के आस-पास के लोग ब्राह्मी नहीं समझते थे। उधर खरोष्ठी लिपि का अधिक प्रचार था। अतः उधर के लिए अशोक ने अपना उपदेश खरोष्ठी लिपि में ही लिखवाया। लेखों के अक्षर जो पत्थरों में खोदे गये हैं वे बड़े ही सुन्दर हैं।

इस तरह उस युग में भी अशोक ने अपने राज्य में एक भाषा और एक लिपि का प्रयोग कर भारतीय राष्ट्र की एकता और उसके विकास को बढ़ाया। एक विद्वान ने लिखा है—विश्व के अन्य देशों में राष्ट्र-भाषा एवं राष्ट्रीय लिपि की कल्पना आधुनिक युग की देन है। इस क्षेत्र में भी अशोक अपने सह-धर्मी सम्राटों से शताब्दियों आगे था।[1]

अभि-लेखों का महत्व

इन अभिलेखों का बड़ा महत्व है। ये कभी मिटने वाले नहीं हैं। आज भी हम इनके द्वारा अशोक के उपदेशों को सुन रहे हैं। अशोक का हृदय बड़ा साफ था। उसी हृदय की ये आवाजें हैं। अशोक ने इसीलिए उनको पत्थरों पर खुदवा दिया कि उसके बाद के आनेवाले लोग भी इन उपदेशों को पढ़ते रहें और लाभ उठाते रहें। इन उपदेशों में शान्ति एवं सहनशीलता, प्रेम एवं भाईचारे के संदेश हैं। इन उपदेशों को पढ़ने से और इनके अनुसार चलने से मनुष्य सच्चे अर्थ में मनुष्य बन सकता है और संसार में सुख-शान्ति का राज्य कायम हो सकता है। इन लेखों से प्राचीन भारत का इतिहास लिखने में भी लेखकों को बड़ी सहायता

1–रामबृक्ष सिंह, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, पृ०-130।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिलती है।

लघु शिलालेख एक में अशोक ने स्वयं अपनी इच्छा प्रकट की थी कि उसके विचार शिलाओं और स्तम्भों पर खुदवाने चाहिए। श्री भगवत शरण उपाध्याय के शब्दों में अशोक के अभि-लेख संसार के अभि-लेख साहित्य में विस्मय-जनक, अपूर्व, अद्भुत और श्रेष्ठ हैं। सादी सरल जन-भाषा (पाली) में अशोक के उपदेश शब्द शताब्दियों का कालान्तर लाँघ कर जैसे आज भी सुन पड़ते हैं। उसके उपदेश, उसके आचार-व्याख्यान, उसके अनुशासन, शिलाओं, दरीगृहों की दीवारों और खम्भों पर खुदे हैं जिससे काल का प्रभाव उन पर कम हो और लोग उन्हें बराबर पढ़ते रहें। इनको घनी आबादियों में रखा गया था जिससे लोग उनसे लाभ उठा सकें। जिन स्थानों पर पर्वत-शिलाएँ न थीं वहाँ सुदूर चुनार स्तम्भों की व्यवस्था की गई।[1]

उपाध्याय ने ऐसा भी लिखा है कि— भारतीय इतिहास में अशोक के अभि-लेखों का स्थान असाधारण है। उनसे उसके राज्य काल की सारी बातों का पता चलता है। वे प्रशस्ति परक नहीं हैं। ये स्वय सम्राट के शब्द हैं जो सदियों और सहस्राब्दियों के पीछे के होने पर भी सीधा हृदय पर असर करते हैं। जैसे हम उनके शब्द आज भी सुन रहे हैं—उनकी शैली और सरलता इस प्रकार स्वाभाविक है। ये लेख पत्थर के स्तम्भों और पर्वत की शिलाओं पर हिमालय से मैसूर तक और उड़ीसा से कठियावाड़ तक खुदे मिलते हैं।[2]

प्रो० राधा कमल मुखर्जी ने लिखा है कि अशोक ने अपने अभि-लेखों (धर्म-लिपि) के द्वारा किसी विशेष धर्म का नहीं, वरन् जीवन को अच्छा बनाने और ऊँचा उठाने वाले उदार एवं नैतिक, सहिष्णु और सामाजिक नियमों का प्रचार किया है।[3]

डा० रमाशंकर त्रिपाठी के अनुसार अशोक के अभिलेख अनूठे लेख-संग्रह हैं। उनसे उसकी आंतरिक भावनाओं और आदर्शों का पता लगता है और वे उस महान् सम्राट के शब्दों को ही शताब्दियों से वहन करते आये हैं।

1—भारतीय इतिहास के आलोक स्तम्भ, 1, इलाहाबाद, 1950, पृ०-89
2—प्राचीन भारत, पृ०-196-97
3—भारत की संस्कृति और कला, दिल्ली. 1959, पृ०-98

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आर० सी० मजुमदार के अनुसार इतनी सरल और आदर्श भाषा में राजा और प्रजा के सम्बन्धों को व्यक्त करने वाला निश्चय ही वह पहला सम्राट था।

कुछ धर्म-लेखों के नमूने

धर्म-लेखों के पढ़ने और सुनने से हमें अशोक के आचरण और विचारों के सम्बन्ध में पूरी जानकारी मिल जाती है। हम उसके कुछ उपदेशों का उल्लेख पहले भी कर चुके हैं। यहाँ उसके लेखों से कुछ और मुख्य उपदेशों का उल्लेख किया जाता है। कलिंग के युद्ध के बाद अशोक को लड़ाई से घृणा हो गयी। वे अपने लेख में कहते हैं—"देवताओ के प्रिय (अशोक) को इस बात से बहुत बड़ा दु:ख हुआ कि एक देश की विजय करने के समय कितने लोगों की हत्या करनी पड़ी, कितने कैद हुए और कितने (लड़ाई के बाद) मृत्यु के गाल में चले गये। देवताओं के प्रिय को यह विचार कर और भी दु:ख हुआ कि वहाँ भी सब जगह ब्राह्मण, श्रमण (साधु-सन्त) तथा अन्य सम्प्रदाय के मनुष्य और गृहस्थ रहते हैं जिनमें सज्जनों, माता-पिताओं और गुरुजनों के प्रति सेवा-भाव है तथा जो अपने मित्र, परिचित, सम्बन्धी और नौकर-चाकर के प्रति अच्छा व्यवहार किया करते हैं। ऐसे कितने ही लोगों की युद्ध में हत्या कर दी जाती है अथवा अपने सगे-सम्बन्धियों को उनसे अलग कर दिया जाता है। जो बचे भी रहते हैं, उनको भी अपने मित्रों, परिचितों, सहायकों और सम्बन्धियों के विपत्ति में पड़ जाने से बड़ी पीड़ा होती है। इस तरह ये सब विपत्तियाँ वहाँ सभी लोगों को भोगनी पड़ती हैं। इससे मुझे बहुत दु:ख होता है।"

"अपने अभिषेक के 12वें वर्ष बाद मैंने यह आदेश दिया कि मेरे राज्य-भर में प्रादेशिक (कमिश्नर), राजुक और युत आदि अफसर हर पाँचवें वर्ष दौड़ा किया करें और शासन-सम्बन्धी कार्यों के साथ-साथ लोगों को यह भी बताया करें कि—माता-पिता की सेवा करना, मित्रों, परिचितों, सम्बन्धियों, ब्राह्मणों और साधुओं की सहायता करना अच्छा है। थोड़ा संचय (धन बचाना) करना भी अच्छा है।"

"देवताओं का प्रिय (अशोक) दान या पूजा को इतना मूल्यवान् नहीं मानता जितना कि वह सब धर्मों की वृद्धि को महत्व देता है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोग एक दूसरे के धर्म को ध्यान देकर सुनें और उसका आदर करें। सब सम्प्रदायों में धर्म के सारतत्व की वृद्धि हो। (बारहवां शिलालेख) मेरे राज्य में सब जगह सब सम्प्रदाय के लोग एक साथ मेलजोल से रहें (सातवां शिलालेख)।

मैं जितना ही परिश्रम करुं और कितना ही राजकार्य करुं मुझे सन्तोष नहीं होता .... मैं जो कुछ परिश्रम करता हूँ वह इसलिए करता हूँ कि प्राणियों का मेरे प्रति जो ऋण है उससे उऋण हो जाऊ (छठा शिलालेख)। छठा शिलालेख में ही कहा गया है— समस्त विश्व की भलाई करना मेरा कर्त्तव्य है। समस्त विश्व की भलाई करने से बड़ा अन्य कोई कर्त्तव्य नहीं है।

"यह धर्म-लेख इसलिये लिखवाया गया कि मेरे बेटे, पोते, परपोते तलवार द्वारा विजय करने का विचार न करें। विजय करने में दया और नम्रता से काम लेना चाहिये। धर्म-विजय को ही सच्ची विजय माननी चाहिये। इसी विजय में आनन्द मानना चाहिये।"

अशोक के अन्तिम दिन

सम्राट को अपने अन्तिम दिनों में कुछ कष्ट और कठिनाइयों का अनुभव करना पड़ा। अशोक की पत्नी देवी की मृत्यु हो गयी। देवी बड़ी धर्मात्मा औरत थी और अशोक को धर्म के कार्यों में बड़ी सहायता करती थी। अब वह न रह गयी। अशोक के पुत्र महेन्द्र और पुत्री संघमित्रा लंका चले गये। अब अशोक को कुछ अकेलापन मालूम पड़ने लगा। अतः कुछ मंत्रियों के कहने-सुनने से अशोक ने तिष्यरक्षिता नामक औरत को अपनी रानी बना ली। किन्तु अशोक धर्मात्मा थे और तिष्यरक्षिता नीच स्वभाव की औरत थी। उसका मन चंचल था। उसमें ज्ञान की कमी थी। एक दिन वह कुणाल को बुरे मार्ग में जाने के लिए बढ़ावा देने लगी। कुणाल उसका सौतेला पुत्र था। वह बड़ा ही सदाचारी था। उसने अपनी सौतेली माँ को बहुत फटकारा। लेकिन तिष्यरक्षिता के विचार बहुत संकुचित थे। वह कुणाल पर रंज हो गयी और उसने उससे बदला लेने के लिए मन में ठान लिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुणाल तक्षशिला का सुबेदार था। तिष्यरक्षिता ने एक आज्ञापत्र लिखवाया। उसने अशोक की मुहर चुरा ली और उस आज्ञापत्र पर सम्राट की मुहर का चिह्न लगवा दिया। उस आज्ञापत्र में कुणाल की आँखें मांगी गयी थीं। कुणाल अपने पिता का बड़ा भक्त था। वह अनुशासन का भी प्रेमी था। अतः आज्ञापत्र मिलते ही कुणाल अपनी आँखें निकलवाने के लिए तैयार हो गया। कहा जाता है कि उसने अपनी आँखों को दे डाला।

पितृभक्त कुणाल

अब कुणाल राजपाट छोड़कर भिखारी बन गया। वह वीणा भी खूब बजाता था। एक दिन वह वीणा बजाते और गाते हुए राजमहल के दरवाजे पर पहुँचा। साथ में पुत्र और पत्नी भी थे। अशोक ने अपने पुत्र की आवाज पहचान ली। उसने उसे महल के अन्दर बुला भेजा। सामने आते ही अशोक कुणाल को अंधा देखकर बहुत दुःखी हुआ। अब तिष्यरक्षिता के जाल का भंडाफोड़ हो गया। बुरे कर्म का बुरा फल होता है। तिष्यरक्षित को कठोर सजा मिली। उसे अपने प्राण से हाथ धोना पड़ा। कुणाल को बहुत इनाम मिले और वह पिता की भक्ति के कारण अमर बन गया। लोग तिष्यरक्षिता की शिकायत करने लगे और कुणाल की सभी जगह प्रशंसा होने लगी।

अपने जीवन के अन्तिम दिनों में भी कष्ट और कठिनाइयों के बीच भी अशोक घबड़ाये नहीं। वे अपने धर्म के मार्ग से इधर-उधर विचलित नहीं हुए। दिल खोलकर दया और दान के काम करते रहे। खजाना खाली होने लगा। अतः एक समय प्रधान मन्त्री ने अशोक को समझाया कि सब खजाना खाली नहीं होना चाहिये। इस पर अशोक के दिल में बडा दुःख हुआ। उसकी आँखों में आँसू भर आये। अशोक के पास आँवला का एक फल बच गया था। अशोक ने उस फल को भी दान कर दिया। उसने अपने प्रधान मंत्री की बात भी मान ली।

अशोक की मृत्यु

इसके बाद अशोक की मृत्यु हो गयी। अशोक ने करीब 41 वर्षों तक राज्य किया। वे ईसा से 232 वर्ष पहले और आज से 2329 वर्ष पहले मरे थे। इन 41 वर्षों में उन्होंने ९ वर्षों तक साधारण राजा की तरह राज्य किया। कलिंग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की लड़ाई के बाद ३२ वर्षों तक उन्होने एक आदर्श मानव के रूप में राज्य किया। इस काल में अशोक ने अपने को कभी सम्राट नहीं समझा। वे कर्मयोगी थे। उन्होंने अपने को एक आदर्श मानव और सच्चा जन-सेवक सिद्ध किया।

दूसरे व्यक्तियों से अशोक की तुलना।

इतिहास में कई ऐसे पुरुष हुए हैं जो बड़े समझे जाते हैं और महान भी कहलाते है। कुछ लोग अशोक के साथ उनकी तुलनां भी करते हैं। रोम में एक सम्राट हुआ था जिसका नाम कौन्सटेंनटाइन है। कौन्सटेंनटाइन ने भी ईसाई धर्म का प्रचार किया था। उसने ईसाई धर्म को राजधर्म भी बना दिया था। उसका साम्राज्य भी विशाल था। किन्तु उसने राजनैतिक स्वार्थ के ख्याल से ईसाई धर्म अपनाया और इसका प्रचार किया। उसके राज्यारोहण के समय तक ईसाई धर्म एक शक्तिशाली तत्व बन गया था। कौसटेंनटाइन ने अपनी स्थिति सुदृढ़ करने और लोकप्रियता की प्राप्ति के लिए ईसाई धर्म स्वीकार किया, उसका प्रचार किया और उसे राजधर्म बनाया। अशोक के द्वारा बौद्ध धर्म के अपनाने और प्रचार कराने में वैसा कोई स्वार्थ नहीं था।

यह भी उल्लेखनीय है कि अशोक ने बौद्ध धर्म को राजधर्म नहीं बनाया। रोम के एक दूसरे सम्राट मार्कस औरेलियस से भी अशोक की तुलना की जाती है। लेकिन अशोक मार्कस औरेलियस से अधिक श्रेष्ठ था। मार्कस औरेलियस भी रोम की राजनैतिक प्रभुता कायम करना चाहता था और उसने ईसाइयों को कुचलने का प्रयत्न किया। इंगलैंड में अल्फ्रेड नाम का एक प्रसिद्ध राजा हुआ था। उसने इंगलैंड की शक्ति को बहुत बढ़ावा था। किन्तु उसने जो कुछ काम किया अंग्रेजों के हित में किया। अशोक तो जो करता था सबके हित में करता था। विचारों की अभिव्यक्ति की दृष्टि से औलिवर क्रौमवेल से तुलना की जाती है। मध्य यूरोप के एक सम्राट शार्लमेन से भी अशोक की तुलना की जाती है। शार्लमेन ने भी एक राज्य कायम किया था ओर ईसाई धर्म के प्रचार के लिए प्रयत्न किया। किन्तु शार्लमेन का बल तलवार था। वह तलवार के जोर से राज्य की विजय और ईसाई धर्म का प्रचार करना चाहता था। अतः अशोक से उसकी तुलना नहीं हो सकती। वह अशोक से बहुत नीचे था। एच० जी वेल्स

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के कथनानुसार कौंसटैंटाइन या शार्लमेन का नाम अबतक जितने भी लोगों ने सुन रखा होगा उनसे कहीं अधिक लोग आज भी अशोक को याद करते है। एच० जी० राव लिसन के मतानुसार अशोक की तुलना प्राय: मार्क्स और लियस, संतपाल और कौंस टैंनटाइन से की जाती है परन्तु किसी भी ईसाई सम्राट ने ईसा द्वारा पहाड़ पर दिये गये उपदेशों को एक विशाल साम्राज्य का आधार नहीं बनाया। सिकन्दर, सीजर तथा नेपोलियन भी महान समझे जाते हैं किन्तु कुछ खास दृष्टि से ही ये महान् हो सकते हैं, विचारों की दृष्टि से नहीं। ये तो सैनिक विजेता थे और इनके विचार अशोक की तुलना में संकुचित थे।

अरबों के बीच पहला ओमर प्रसिद्ध लोकप्रिय शासक हुआ था। लेकिन वह अपने अरब राष्ट्र की ही उन्नति के लिए चिन्तित रहता था।

डा० एच० सी० राय चौधरी के अनुसार भारतीय सम्राटों में अशोक चन्द्रगुप्त के समान शक्तिशाली, समुद्रगुप्त के समान प्रतिभा सम्पन्न और अकबर के समान निष्पक्ष था। मुगलों में अकबर बड़ा सम्राट हुआ था। वह सहिष्णु भी था। किन्तु अशोक की सहिष्णुता अकबर में भी नहीं था। अकबर की सहिष्णुता सीमित थी और राजनैतिक स्वार्थ से प्रभावित थी।

इस तरह संसार के महान् राजाओं से अशोक की तुलना करने के लिए प्रयत्न हुआ है किन्तु यह प्रयत्न सफल नहीं होता है। अशोक की तुलना किसी भी अन्य राजा या सम्राट से नहीं हो सकती है। श्री भगवत शरण उपाध्याय ने लिखा है— अशोक की गणना संसार के महान सम्राटों में की जाती है। परन्तु वास्तव में वह और राजाओं की पंक्ति में रखा ही नहीं जा सकता। उसका स्थान औरों से सर्वथा अलग है। अशोक इन सबसे ऊपर हैं। उसका हृदय इन सबसे बड़ा था, उसका आचरित आदर्श इन सबसे ऊंचा था। अशोक अद्वितीय है, अतुलनीय है। प्रसिद्ध इतिहासकार डा० राधा कुमुद मुकर्जी ने भी लिखा है कि सम्पूर्ण इतिहास में कोई भी राजा ऐसा नहीं है जिसका जीवन मानव अशोक या राजा अशोक की तुलना में लाया जा सके।

प्रसिद्ध पश्चिमी इतिहासकार एच० जी० वेल्स ने भी लिखा है— प्रत्येक युग तथा प्रत्येक राष्ट्र ऐसे राजा को प्रस्तुत नहीं कर सकता। विश्व इतिहास में, आज तक भी, अशोक की समता किसी से नहीं की जा सकती। डा० राधाकुमुद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुखर्जी ने लिखा है – मानव तथा शासक के रूप में विश्व के राजाओं के ऐतिहासिक वृत्तान्त में अशोक के समान राजा मिलना कठिन है।[1] डा० आर० एस० त्रिपाठी के अनुसार अन्य व्यक्तियों के साथ अशोक की तुलनाएं वास्तव में सर्वथा अनुचित हैं। अशोक उदारता की मूर्ति व मानवता का सबसे बड़ा पुजारी था।[2] अशोक में एक साथ जितने गुण जितनी अधिक मात्रा में पाये जाते हैं उतने गुण उतनी मात्रा में एक साथ किसी दूसरे राजा में नहीं पाये जाते हैं। उसका दिल समुद्र के जैसा विशाल था और उसका दिमाग हिमालय के जैसा उँचा था। वह सम्राटों में सर्वश्रेष्ठ था— सर्वोत्तम था। वह मनुष्यों में असाधरण था–महामानव था। वह एक आदर्श व्यक्तिथा। वह आदर्शों का भी आदर्श था। बड़े लोगों की यादगारी में तरह-तरह की इमारत बनती है किन्तु इमारत का कभी नाश भी हो सकता है। अशोक का स्मारक मनुष्य का हृदय-पट है। जितने लोग आज भी उसके नाम को प्रेम के साथ याद करते हैं उतने लोग बहुत से सम्राटों के नाम भी नहीं सुने होंगे। अत: अशोक अपने ढंग का अकेला है। वह इतिहास के आकाश में सूरज की तरह अकेला ही चमक रहा है।

विश्व-संस्कृति के विकास में अशोक का योगदान उसके उस अतिमानवीय स्वरुप की अभिव्यक्ति करता है जिसकी समता करने में विश्व का कोई भी सम्राट समर्थ नहीं है।[3] अशोक भारत के इतिहास में ही नहीं बल्कि संसार के इतिहास में सबसे बड़ा दार्शनिक राजा हुआ है। विश्व के किसी अन्य सम्राट में इतनी शक्ति, दया, न्यायभावना और दानशीलता नहीं थीं जितनी उसमें।[4]

अशोक भारतीय इतिहास में सबसे बड़े साम्राज्य का स्वामी होता हुआ भी तपस्वी और विरागी था। यह ब्रज्या (सन्यास) ले सकता था, पर ऐसा उसने शायद इस कारण से नहीं किया कि जिसमें राज्य के उपकरणों से वह लोकहित कर सके।[5]

---

1 अशोक है।
2 प्राचीन भारत (अंग्रेजी) पृ० 177-78
3 रामवृक्ष सिंह, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति, पृ०—134
4 पौलमैस्सन औसैंल।
5 प्राचीन भारत का इतिहास, पटना, 1957, पृ० - 203-04

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राणिमात्र उसके आदर के पात्र थे और उनका हित वह सदा चाहता था। मानव और पशु दोनों के हित के लिए उसे चिन्ता थी। उसने अपनी प्रजा के साथ तो अपनी सन्तान के समान ही व्यवहार किया ही, दूसरे राज्यों की प्रजा को भी अपनी दिग्विजय बृत्ति से शंकित न होंने दिया।

वह अपनी प्रजा की भलाई के लिए सदा प्रत्यनशील रहता था। अब तक राजा प्रजा के लिए दूर से दर्शनीय देव मात्र था; परन्तु अशोक ने अपने को उसमें से एक कर दिया। उसने उसके सम्पर्क में आकर उसको बता दिया कि वह भी उसी की भाषा बोलता है, उसी की भाँति सुख-दुख देखता है। अशोक ने अहिंसा और सहिष्णुता का समर्थन किया और इन सिद्धान्तों को व्यवहारिक रुप भी दिया। पहले भी राजा अहिंसा को परमधर्म समझने वाले हुए थे; किन्तु किसी ने उसे व्यवहर का रुप न दिया था।

प्रो० राधाकमल मुखर्जी ने लिखा है— अशोक ने बौद्ध धर्म को एक सार्वभौम धर्म में बदल दिया, जिसका सारतत्व नैतिक था और उद्देश्य मानवतावादी। इसलिए अशोक महान् है। किन्तु उनकी महानता का आधार इससे भी अधिक इस तथ्य में है कि उन्होंने सहिष्णुता, उदारता और करुणा की सुदृढ़ नैतिक नींव पर एक धर्मनिरपेक्ष मौर्य साम्राज्य की एकता की स्थापना की। एक ही धर्म पर आधारित साम्राज्य की स्थापना में कौम्स्टैंटाइन, शार्लमेन अथवा अकबर से कहीं अधिक सफलता अशोक को मिली थी। इसलिए उनका यह कथन सार्थक था कि जम्बूद्वीप में पहलीबार मानवों के साथ देवगण संयुक्त होने लगे हैं। उन्होंने अपने राजदूतों और सन्देशवाहकों को धर्मप्रचार और शान्ति-प्रसार के लिए भेजा था। वे संसार के सर्वप्रथम अन्तर्राष्ट्रीय एवं शान्तिवादी शासक थे। बाद की पीढ़ी के भारतीयों ने अत्यन्त श्रद्धापूर्वक उन्हें धर्माशोक नराधिपकी संज्ञा प्रदान की थी। एच० जी० वेल्स का यह कथन नितान्त उचित है कि अशोक संसार के महानतम सम्राट थे।[1]

अशोक के व्यक्तित्व का मूल्यांकन करते हुए प्रसिद्ध इतिहासकार श्री भगवत शरण उपाध्याय ने ऐसा भी लिखा है — उसकी भाँति, प्रकार और मात्रा दोनों

1 भारत की संस्कृति और कला, पृ० 99

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में, राजाओं में न कोई पहले हुआ, न पीछे। कठोर, व्यस्त, दुखी जगत में वह अकेला है, सर्वथा अकेला हम उसे देखते हैं। इतिहास का परदा उठा तब जगत की ओर देखते हैं, फिर लौटकर उसे ही देखते हैं। अपना सा वहीं है। निश्चय, प्रकृति ने उसे भी ढ़ालकर साँचा तोड़ दिया था।[1]

भारत के महान स्वतन्त्रता सेनानी और स्वतन्त्र भारत के पहला प्रधान मंत्री श्री जवाहर लाल नेहरु के मतानुसार अशोक ऊंचे दर्जे की प्रशंसा का पात्र था और हर एक भारतीय का हृदय भारत के इतिहास के इस युग पर विचार करने में आनन्द से भर जाता है।

बड़े भारी-भारी पत्थरों से बना हुआ राजमहल नष्ट हो गया और अपनी कोई निशानी नहीं छोड़ गया लेकिन अशोक की कीर्ति एशिया के महाद्वीप भर भर में आज भी जिन्दा है और उसकी धर्मलिपियों में ऐसी बातें लिखी हुई हैं जिनका भाव हम समझ सकते हैं और जिनकी कीमत हम पहचान सकते हैं। आज भीह म उनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं।[2]

अशोक ऐसा व्यक्ति था जो सम्राट होते हुए भी महान था और इज्जत के काबिल था।[3]

देश, विदेश के अनेक इतिहासकारों, विद्वानों और चिन्तकों ने आदर्श मानव, आदर्श सम्राट और आदर्श शासक के रुप में अशोक की प्रशंसा की है। वास्तव में अशोक विश्व इतिहास का एक महानतम विभूति है जिसने सबसे पहले विश्व में स्वतन्त्रता, समानता बन्धुत्व और लोकहित का सिंहनाद उद्बोषित किया और अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति तथा सहयोग की नीति कार्यान्वित की।

अशोक पहला शासक था जिसका उदार दृष्टि में सम्पूर्ण मानव समाज ही नहीं, अपितु सभी जीवधारी समान थे। वह अपने को सभीभूतों का हितैषी मानता था।....अशोक ने विश्व-बन्धुत्व एवं लोक कल्याण का अपना सन्देश दूर-दूर देशों तक फैलाया। अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में वह शान्ति एवं सहष्णुता का पुजारी था। अशोक ने ही सर्वप्रथम विश्व को जीओ और जीने दो का पाठ पढ़ाया।[4]

---

1 भारतीय इतिहास के आलोक स्तम्भ, इलाहाबाद, 1950, पृ० 61
2 इतिहास के महापुरुष, नई दिल्ली, 1960, पृ० 19
3 वही, पृ० 14
4 कृष्णचन्द्र श्रीवास्तव, प्राचीन भारत, इलाहाबाद, पृ० 227

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अशोक में एक और बहुत बड़ा गुण था। बहुत से सत्ताधारियों के सार्वजनिक और व्यक्तिगत जीवन में अन्तर दिखाई पड़ता है। यदि उनका सार्वजनिक जीवन अच्छा होता है तो व्यक्तिगत जीवन निम्न श्रेणी का होता है। उनके व्यक्तिगत जीवन में स्वेच्छाचारितापूर्ण भोगविलास की प्रधानता हो जाती है। वे शारीरिक औ इन्द्रिय सुख में लिप्त हो जाते हैं। लेकिन अशोक के सार्वजनिक और व्यक्तिगत जीवन में कोई अन्तर नहीं था। दोनों ही प्रकार का जीवन समान रुप से उच्चकोटि का था। अभूत धन-वैभव और भोगविलास के प्रचुर साधनों के बीच वह त्यागमय जीवन ब्यतीत करता था। 'सदाजीवन, उच्च विचार' वाले सिद्धान्त का वह सच्चा पोषक था।

प्रसिद्ध इतिहासकार राधा कुमुद मुकर्जी के मतानुसार अशोक इतिहास में शान्ति एवं विश्व बन्धुत्व के अन्वेषकों में सर्वप्रमुख है। इस दृष्टि से वह न केवल अपने समय से अपितु आधुनिक समय से भी बहुत आगे था, जो अब भी इस आदर्श को कार्यान्वित करने के लिए संघर्ष कर रहा है। ये बन्धन जो राष्ट्रों को एक दूसरे से अलग कर देते हैं, उसकी विश्वव्यापी भ्रातृत्व की भावना के मार्ग में वाधा नहीं डाल सकते थे।[1]

प्रसिद्ध आंग्ल इतिहासकार वी० ए० स्मिथ के कथनानुसार अशोक योग्य शासक था और उसने अपने विशाल साम्राज्य पर 40 वर्षों तक सफलता पूर्वक शासन किया। उसने अपना ऐसा नाम छोड़ा जिसे लोग दो हजार वर्षों के बाद भी नहीं भूले हैं।[2]

अशोक ने राज्य की सर्वोच्च शक्ति को नैतिक विधान से अभिन्न माना और इस प्रकार उसका शासनकाल भारतीय संस्कृति का महान युग ही नहीं था बल्कि सभ्यता के इतिहास में भी एक अति महत्वपूर्ण काल था।[3] अशोक ने प्लेटो (अफलातून) के उस आदर्श को पूरा कर दिखाया जिसमें शासक दार्शनिक और दार्शनिक शासक होने की बात कही गई है।

1 अशोक, पृ० 59

2 औक्स फोर्ड हिस्ट्री ऑफ इंडिया, पृ० 137

3 इ० बी० हैवेल, दि हिस्ट्री ऑफ आर्यन रुल इन इंडिया, पृ० 89

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अशोक न सिर्फ महान सम्राट ही था, अपितु उससे भी बढ़ कर वह एक महान् मनुष्य था। धर्मान्धता और कट्टरता की अहित कर भावनाओं से पूर्णतः अछूता रहनेवाला अशोक अपनी विशाल हृदयता और लोक कल्याणकारी नीति के कारण विश्व इतिहास का सर्वाधिक जाज्वल्यमान (प्रकाशमान) नक्षत्र है। उस ने भारत में एक नवीन प्रयोग किया था— राजनीति में सेद्वेष और हिंसा को मिटा कर उसकी नींव स्नेह और सौहार्द्र (सद्भाव) पर रखने का प्रयोग और निस्सन्देह उसने पूर्ण निष्ठा के साथ अपने इस प्रयोग के लिए कष्ट साध्य परिश्रम किया।[1]

विश्व इतिहास में अशोक का शासन काल एक अपूर्व, उज्जवल और अद्वितीय अध्याय है। उसे संसार के सुविख्यात सम्राटों, शासकों, सन्तों, महात्माओं और धर्मप्रचारकों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट हो जाता है कि अशोक की महानता उसके साम्राज्य की विशालता, उसकी सेना की अजेयता, उसके शासन की सुदृढ़ता अथवा उसके राजवैभव में नहीं पाई जाती है; वरन् उसकी महानता उसके अलौकिक व्यक्तित्व, उसकी अगाध धर्म-परायणता, उसके धार्मिक विचारों की उदारता, उसके पैतृक शासन, उसके राष्ट्र निर्माण की योजनाओं, उसकी साहित्य तथा कला की अपूर्व सेवाओं तथा उसकी धर्म विजय में पाई जाती है। सत्य तो यह है कि समस्त मानव समाज तथा समस्त संसार के समस्त प्राणियों के कल्याण की विराट चेष्टा उसे न केवल भारत वरन् सम्पूर्ण विश्व के महान् समाटों के मध्य सर्वोत्कृष्ट स्थान प्रदान करती है।[2]

अशोक और स्वतंत्र भारत

अशोक मानवता का पुजारी था। उसकी उदारता सार्वभौमिक थी। भारतीय उद्यान का एक अद्वितीय सुमन शताब्दियों पूर्व काल के गाल में चला गया, परन्तु उसकी सुगन्धि आज भी भारत को सुगन्धित कर रही है और कालान्तर में भी करती रहेगी।[3] स्वतन्त्र भारत ने भी अशोक को याद किया है। सारनाथ स्तंभ के मस्तक पर जो चौमुहा सिंह की आकृति है उसे ही स्वतन्त्र भारत ने

1क देवनारायण असोपा, भारत का इतिहास, दिल्ली, 1966, पृ० 18

2 प्रो० श्रीनेत्र पाण्डेय, भारतवर्ष का सपूर्ण इतिहास (महापाभाग), इलाहाबाद, पृ०, 187

3 श्री हरिभाऊ उपाध्याय, प्रियदर्शी अशोक, इलाहाबाद, 1952, पृ० 249

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपना राज-चिह्न बनाया है। उसी चिन्ह को हम कागज के नोटों में देखते हैं। राष्ट्रीय झंडे में जो एक चक्र दिखाई पड़ता है वह भी अशोक का ही धर्म-चक्र है। इस तरह स्वतन्त्र भारत ने उसे सम्मानित किया है और उसके प्रति अपनी कृतज्ञता दिखलायी है। स्वतन्त्र भारत अशोक के आदर्शों से भी प्रभावित है। इसका पहला प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू अशोक की नीति का अनुसरण करने के लिए प्रत्यन करते रहे। भारत सरकार का नारा है—'सत्यमेव जयते' यानी सत्य की ही विजय होती है।

भारत की राजधानी नई दिल्ली में एक उच्चस्तर के सरकारी होटल का नाम भी अशोक के नाम पर रखा गया है। बिहार की राजधानी पटना में एक बहुत लम्बी एवं प्रमुख सड़क का नाम भी अशोक राजपथ रखा गया है।

अशोक और संसार

लेकिन अशोक तो भारत को ही नहीं, समस्त संसार को राह दिखानेवाला है। उसके विचार इतने ऊँचे थे कि वह अपने ही युग से नहीं आगे था बल्कि आधुनिक युग से भी बहुत आगे था। वह अहिंसा का प्रबल प्रचारक था। उसीके आदर्शों पर चलने के लिए आज की दुनिया भी प्रयत्न कर रही है। रात दिन संघर्ष कर रही है किन्तु सफलता नहीं मिल रही है।

आधुनिक युग विज्ञान का युग है। विज्ञान वरदान और अभिशाप दोनों ही सिद्ध हुआ है। वरदान के रूप में विज्ञान से मानव का बहुत हित हुआ है किन्तु अभिशाप के रूप में विज्ञान ने मानव की बहुत बुराई भी की है। लेकिन इसमें विज्ञान का अपना दोष नहीं है। दोष तो हैं विज्ञान का दुरुपयोग करने वाले का। विज्ञान के बदौलत अनेक भयानक और घातक अस्त्र-शस्त्र का निर्माण हुआ है। नर-संहार के लिए वे सरल एवं सुलभ साधन बन गये हैं। समाज में स्वार्थ एवं शोषण बहुत बढ़ गये हैं। छल-कपट, छीना-झपटी, मार-काट का बाजार बहुत ही गरम हो गया है। जान और माल सभी असुरक्षित हो गये हैं। सभी जगह अशान्ति और असन्तोष का प्रचार है। मनुष्य अपने ही संकीर्ण विचारों और दुष्कर्मों का फल भोग रहा है। वह कंटीला बबूल का पेड़ बोकर मठा फल कहाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

से और कैसे पा सकता है ! जैसा विचार, जैसा कर्म वैसा फल स्वभाविक है। जैसा बोओगे वैसा ही काटोगे वाली कहावत चरितार्थ होती है।

अतः मनुष्यों और राष्ट्रों के बीच तो कभी युद्ध हो ही जाते हैं अथवा युद्ध की शंका बनी रहती है। लड़ाई की स्थिति में नर-संहार और धन-नाश तो सर्वविदित ही है। बीसवीं शताब्दी में दो युद्ध हुए हैं। उन्हें विश्वयुद्ध या महायुद्ध कहते हैं। पहला युद्ध 4 वर्षों (1914-18 ई०) तक और दूसरा युद्ध 6 वर्षों (1939-45 ई०) तक हुआ था। इन युद्धों में लाखों आदमी मरे और लाखों-करोड़ों की सम्पत्ति नष्ट हुई। दूसरे ही महायुद्ध की अवधि में तो एक बहुत ही दर्दजनक एवं शर्मजनक घटना हुई। हिरोशिमा जापान का एक उन्नत नगर था वहाँ हजारों नर-नारी, बाल-युवा-वृद्ध रहते थे। उसी नगर पर 1944 ई० में अणुबम गिराया गया था। नगर धाराशायी हो गया। कितने लोग मर गये, कितनी सम्पति बर्बाद हो गयी।

1928 ई० में कुछ विश्व शक्तियों ने युद्ध विरोधी नीति का पालन करने के लिए एक समझौता किया था। इसे केलग ब्रायेड समझौता कहते हैं। लगभग 22 सौ वर्ष पहले अशोक ने इस समझौता के सिद्धान्त को व्यावहारिक रूप दिया था किन्तु विश्वशक्तियाँ अबतक युद्ध विरोधी नीति का परित्याग नहीं कर सकी हैं। राष्ट्रसंघ (1920-39) युद्ध और शस्त्रीकरण रोकने में असफल रहा। 1932 ई० में जेनेवा (यूरोप) में निरस्त्रीकरण के सम्बन्ध में एक विश्व सम्मेलन हुआ था। किन्तु निरस्त्रीकरण की दिशा में कोई निर्णय नहीं हो सका – कुछ भी प्रगति नहीं हुई। दूसरे विश्वयुद्ध (1939-45) के बाद संयुक्त राष्ट्रसंघ भी शस्त्रीकरण और युद्ध रोकने के लिए प्रयत्नशील एवं संघर्षरत है किन्तु सफलता अभी दूर ही है, सन्देहात्मक भी है। सफलता क्यों और कैसे मिले ? जो राष्ट्र गुटबन्दी को प्रोत्साहन देता है, अपने लाभ के लिए दूसरे राष्ट्र को हानि पहुँचाने की कोशिश करता है, जो अस्त्र-शस्त्र का उत्पादन करता है और दूसरे राष्ट्र को देता है। यदि वह राष्ट्र शान्ति और निरस्त्रीकरण की बात करता है तो पाखण्ड है, आडम्बर है। ऐसा राष्ट्र किसी अन्य राष्ट्र को जरा सा भी प्रभावित नहीं कर सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आजकल की तो लड़ाई ऐसी है कि जो लोग इसमें भाग नहीं लेते हैं वे भी कष्ट और कठिनाइयों से नहीं बच पाते हैं। लड़ाई के नाम पर लोग थर-थर काँपते हैं। शान्ति के लिए हाहाकार मचा हुआ है। लड़ाई रोकने और शान्ति रखने के लिए लोग बहुत मिहनत कर रहे हैं। बड़ी-बड़ी सभाएँ होती हैं। बड़े-बड़े संगठन बनते हैं। लम्बे-लम्बे भाषण होते हैं, रोज-रोज योजनाएँ बनती हैं। फिर भी शान्ति नहीं दीख पड़ती है। न तो किसी के दिल में शान्ति है, न किसी देश में शान्ति है और न दुनिया में। शांति कायम हो कैसे ? पहले तो सत्ताधारी मनुष्य के अपने ही दिल में न शांति है और न सच्चाई है। पहले तो अपने दिल में शांति लानी चाहिए— पहले स्वयं सच्चा और ईमानदार बनना चाहिए। यह तभी हो सकता है जबकि मानव के अपने विचार और आचार, सिद्धांत और व्यवहार अच्छे हों। जब अपने भीतर शांति आ जायगी, ईमानदारी आ जायगी तब बाहर शांति के लिए तन, मन, धन से प्रयत्न करना चाहिए। तभी देश और दुनिया में शांति आ सकती है और कायम रह सकती है। यही तो अशोक का सन्देश है और उसीके चरणों के पास बैठकर सबको शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। यदि अशोक के चरण-चिन्ह पर, उसके मार्ग पर विश्व के शासक चलें तो निश्चय ही सभी देशों में लोग सुख-शान्ति का अनुभव करेंगे और वे सुखी-संपन्न होंगे।

होवें सुखभागी सभी, सभी रहें निरोग।
होय भला सबका, रहें दुखी मत लोग ॥

जय हिन्द ! जय जगत !!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मौर्य साम्राज्य का पतन और अशोक का दायित्व

कुछ लेखकों का मत है कि अशोक की कुछ नीतियाँ मौर्य साम्राज्य के पतन में सहायक सिद्ध हुईं। ऐसे लेखकों में महामहोपाध्याय पं० हर प्रसाद शास्त्री का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

पं० शास्त्री के मतानुसार[1] ब्राह्मण यज्ञ और पशुबलि करते थे। अशोक ने अहिंसा की नीति अपनायी और पशुबलि पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इससे ब्राह्मणों की शक्ति और सम्मान को हानि हुई और वे नाराज हो गये।[2] ब्राह्मण मनुष्य और देवताओं के बीच मध्यस्थ होने का दावा करते थे। अत: वे अपने को भूदेव कहते थे। अशोक ने ब्रह्मगिरि के लघु शिलालेख में कहा है कि उसने भूदेव को झूठा सिद्ध कर दिया हैं। इससे भी ब्राह्मणों की भावना को चोट पहुँची।[3] धर्म महामात्रों की नियुक्ति से भी ब्राह्मणों की मान-मर्यादा में कमी हुई।[4] अशोक ने दण्ड समता और व्यवहार समता का सिद्धान्त व्यवहार में लागू किया था। इससे ब्राह्मणों के प्राप्त विशेषाधिकार समाप्त हो गये। शक्तिशाली अशोक के प्रभाव से ब्राह्मण नियंत्रित रहे[5] किन्तु दुर्बल उत्तराधिकारियों के समय में ब्राह्मण अनियंत्रित हो गये। वे पुष्यमित्रशुंग के नेतृत्व में संगठित हुए और उन्होने अन्तिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ का बध कर डाला।[6] ब्राह्मणों की दृष्टि में मोर्यवंश के राजा शूद्र थे। अत: वे शूद्र राजा के आदेशों का विरोध करते थे।

डा० राय चौधरी सहित कई विद्वानों ने डा० शास्त्री के मतों का खंडन किया है।

अहिंसा के आधार पर पशुबलि के विरोध से ब्राह्मणों का असन्तुष्ट होना उचित नहीं जान पड़ता है। ब्राह्मण ग्रन्थों में ही अहिंसा का समर्थन किया गया था। उपनिषदों में यज्ञ और बलि की निन्दा की गई थी।

डा० शास्त्री ने ब्रह्मगिरि के लघु शिला लेख के वाक्य को ठीक से समझा नहीं। उन्होंने गलत अर्थ लगाया। उस वाक्य का सही अर्थ इस प्रकार लगाया गया है – भारतवासी जो पहले देवताओं से अलग थे अब अपने उच्च नैतिकता के कारण देवताओं से मिल गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जहाँ तक धर्म महामात्रों की बात है वे केवल नैतिकता के ही रक्षक नहीं थे उन्हें ब्राह्मणों के कल्याण को भी ध्यान में रखना होता था। उन्हें ब्राह्मणों के साथ उदार व्यवहार करना था। दूसरे, केवल ब्राह्मण लोग ही धर्म महामात्रों के पद पर नियुक्त नहीं किये जाते थे वल्कि अन्य लोग भी नियुक्त किये जाते थे। तीसरे, अशोक ब्राह्मणों के प्रति अभद्र व्यवहार की निन्दा करता था।

अशोक ने न्याय-प्रशासन में एकरुपता और निष्पक्षता लाने के लिए समता की नीति लागू की थी। फिर भी ब्राह्मणों के कुछ प्रमुख अधिकारों पर ध्यान दिया जाता था।

अन्त में यह कहा जा सकता है कि प्रत्यक्ष या स्पष्ट रुप से अशोक का कोई कार्य ब्राह्मण विरोधी नहीं था। वह तो सभी धर्मवालों का सम्मान करता था और उनका हित चाहता था। यद्यपि उसने बौद्ध धर्म स्वीकार किया था तो भी उसने देवताओं तथा ब्राह्मणों का कभी विरोध नहीं किया।

अशोक के हृदय में किसी भी धर्म के प्रति दुर्भावना नहीं थी। उसने दूसरे धर्मों के विचारकों और साधुओं के लिए भी गुफायें वनवाईं। सम्राट प्रायः दूर-दूर की यात्राएं करता था और ब्राह्मणों तथा श्रमणों को भारी संख्या में सोने के सिक्के दान देता था।[1]

रोमिला थापर के मतानुसार भी अशोक की सामान्य नीति न तो विशिष्ट रूप से बौद्ध-समर्थक थी और न ब्राह्मण विरोधी।

ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता कि अशोक के उत्तराधिकारियों और ब्राह्मणों के बीच संघर्ष हुआ हो। दूसरे, अशोक के सभी उत्तराधिकारी बौद्ध ही नहीं थे। जालौक शैव था। तीसरे, ऊँचे पदों पर ब्राह्मणों की भी नियुक्ति होती थी। पुश्यमित्र का सेनापति होना इस बात का प्रमाण है।

अतः पुश्यमित्र का विद्रोह ब्राह्मणों की प्रतिक्रिया के कारण नहीं हुआ वल्कि वह एक शक्तिशाली सेनापति की महत्वाकांक्षी का परिणाम था।

मौर्य साम्राज्य की जड़ कमजोर हो गई थी। उसका अन्त निश्चित था। उसे समाप्त करने के लिए किसी बड़े संगठित विद्रोह की आवश्यकता ही नहीं थी।

1 डा० राय चौधरी, पूर्वोक्त, पृ० 306

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदि पुश्यमित्र के नेतृत्व में ऐसा कोई ब्राह्मण विद्रोह हुआ होता तो अन्य ब्राह्मण वंशों से भी सहायता मिली होती। किन्तु ऐसी किसी सहायता का कोई प्रमाण नहीं मिलता।

पुश्यमित्र द्वारा बृहद्रथ की हत्या एक सामान्य घटना थी जिसका ब्राह्मण असन्तोष, यदि कोई रहा भी हो तो उससे कोई सम्बन्ध नहीं था।[1]

मौर्यों के शूद्र होने के सम्बन्ध में भी एकमत नहीं है। कुछ सूत्रों के अनुसार मौर्य क्षत्रिय थे।

अत: डा० शास्त्री का यह मत कि असन्तुष्ट ब्राह्मणों की प्रतिक्रिय के फलस्वरूप मौर्यवंस की नींव हिल गई और समूचा साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया स्वीकार नहीं किया जाता है।

डा० एच० सी० राय चौधरी, डा० भंडारकर, डा० के० पी० जायसवाल और डा० आर० डी० बनर्जी जैसे विद्वानों ने अशोक की धर्म-विजय नीति की कटु आलोचना की है और इसे मौर्य साम्राज्य के पतन का प्रमुख कारण माना है।

डा० राय चौधरी का कथन है कि कलिग युद्ध के पश्चात् मगध ने धार्मिक क्रान्ति के प्रयत्न में अपनी विजयीनि शक्ति को बर्बाद कर दिया जैसा कि प्राचीन मिस्र ने अखनाटन के पथ-प्रदर्शन में किया था।[2] उनके ये कथन भी है – युद्ध के बाद सम्राट अशोक ने जिस धर्म-विजय का सिद्धान्त अपनाया, उस सिद्धान्त से वे परम्परायें आगे नहीं बढ़ सकीं, जिनका सृजन बिम्बिसार से बिन्दुसार तक के राजाओं ने किया था।[3]

अब वह शक्ति कहाँ चली गई, जिसने सिकन्दर के प्रतिनिधियो को खदेड़ दिया था और और सेल्युकस की फौजों के दांत खट्टे कर दिये थे।[4]

अशोक ने नगाड़े की प्रतिध्वनि (भेरीघोष) को कानून की प्रतिध्वनि (धर्मघोष) के रुप में बदल दिया किन्तु वह उससे ही सन्तुष्ट नहीं हो सका। उसने अपने पुत्रों, पौत्रों आदि से भी युद्धों या विजयों से विरत रहने को कहा।

---

1 कृष्णचन्द्र श्रीवास्तव, पूर्वोक्त, पृ० 239

2 डा० हेमचन्द्र राय चौधरी, प्राचीन भारत का राजनैतिक इतिहास, इलाहाबाद, 1971, पृ० 307

3 वही, 4 वही, पृ० 312

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस तरह लड़ाइयों या जीतों (दिग्विजय) की पुरानी नीति छोड़ दी गई और धम्मविजय की नीति अपनाई गई। अशोक का यह नीतिपरिवर्तन उसकी मृत्यु के बाद पूर्णरूपेण प्रकाश में आया। बिन्दुसार से लेकर कलिंग के युद्ध तक मगध-साम्राज्य के विकास का युग था। धीरे धीरे साम्राज्य का पतन आरम्भ हुआ और वह पुनः उसी स्थिति में पहुँच गया जहाँ से बिन्दुसार और उनके उत्तराधिकारियों ने उसे आगे बढ़ाया था।[1]

डा० भण्डारकर के शब्दों में अशोक ने "भारतवासियों की केन्द्रग्रथित राष्ट्रीय राज्य और विश्व-साम्राज्य की भावनाओं को मार दिया। उसकी धर्म-दृष्टि से भारतवासियों की राष्ट्रीयता और राजनीतिक गौरव नष्ट हो गये।" जायसवाल जी के शब्दों में "अशोक स्वभाव से एक महन्त की गद्दी के लिए उपयुक्त था" आर० डी० बनर्जी का कहना है कि "उन समस्त राजाओं की भाँति जिन्होंने भारत के लिए कूटनीति का परित्याग कर दिया, अशोक ने भी भारत पर विदेशियों के द्वारा विजय करने के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया।"[2]

इन लेखकों के मतानुसार अशोक की धर्मनीति से भारत की राजनीतिक शक्ति को गहरा धक्का लगा। कलिंग विजय के बाद साम्राज्य इतना विस्तृत हो गया था, कि उसमें बिना सैनिक शक्ति के शान्ति नहीं स्थापित रह सकती थी। लेकिन अशोक ने इस पर ध्यान नहीं दिया। जिस समय उसने तलवार फेंक कर भिक्षा पात्र हाथ में लिया और सैनिक अफसरों को युद्ध क्षेत्र की व्यवस्था के बदले धर्म प्रचार की व्यवस्था में लगाया, उसी समय उसने साम्राज्य-पतन के बीज बो दिये।

यह ठीक है कि अशोक की अहिंसा की नीति का यह फल हुआ कि जनता, सैनिक, राजकुमार सभी लोग युद्ध से विरक्त हो गये। धीरे-धीरे उनकी सैनिक शक्ति ठण्डी हो चली। लड़ाई से वे घृणा करने लगे। फल यह हुआ कि जिस सेना ने साम्राज्य का इतना विस्तार किया था, वही अब छोटे-छोटे विदेशी राजाओं का सामना करने में असफल रहने लगी।

---

1 डा० राय चौधरी, पूर्वोक्त, पृ० 288-89

2 ऐशियंट इण्डिया, पृ० 92

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेकिन मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए इस कारण को भी बहुत अधिक महत्व नहीं जा दिया सकता। इसके लिए अशोक की जितनी कटु आलोचना की गई है या की जाती है, उतनी आलोचना उचित नहीं है।

अशोक शतप्रतिशत अहिंसावादी नहीं था। अशोक ने कलिंग वासियों के सामने न तो पश्चाताप किया, न उनसे मफी माँगी और न उनकी स्वतंत्रता वापस कर दी। कलिंग पर उसका आधित्य कायम रहा। दूसरे, पशुब ले और माँस भक्षण पर पूर्णरूप से शीघ्र ही प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया। तीसरे, राज्य में प्राणदण्ड भी बन्द नहीं कर दिया गया। चौथे, ऐसा प्रमाण नहीं मिलता कि सेना बिलकुल भंग कर दी गई और सभी सैनिकों को धर्म प्रचार में लगा दिया गया।

अशोक की सेना अभी भी सुदृढ़ थी। उसने सीमान्त प्रदेशों के लोगों और जंगली जनजातियों को कड़ी चेतावनी दी थी। उसने कहा था कि की गई गलतियों को सम्राट क्षमा करने के। उत्सुक है किन्तु जो क्षम्य है उसी को क्षमा की जायगी। जनजातियों को कहा गया कि वे अपराध करेंगे तो उन्हें कठोर सजा दी जायगी।

इस तरह ऐसा लगता है कि अभी भी सेना शक्तिशाली थी और प्रशासन सुदृढ़ था।

इस विषय के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें भी स्मरणीय हैं : --

(1) अशोक के पूर्व असीरिया, फारस और मकदूनिया के सम्राटों ने अपने साम्राज्यों का आधार सेना, युद्ध और हिंसा को ही बनाया था, धर्म और अहिंसा को नहीं। फिर भी उनके साम्राज्यों का पतन होकर ही रहा। ऐसे ही अशोक के बाद विशाल रोम साम्राज्य का उदय हुआ। युद्ध एवं हिंसा, दमन तथा शोषण के ही आधार पर इस साम्राज्य का भी निर्माण हुआ था किन्तु कालान्तर में इसका भी पतन हो गया। मध्य युग में शार्लमेन और अरब साम्राज्य के विकास एवं पतन हुए। आधुनिक युग में नेपोलियन, मुसोलिनी एवं हिटलर युद्ध एवं हिंसा के प्रबल समर्थक थे, किन्तु इनका और इनके साम्राज्य का भी विनाश हुआ। सैन्य बल पर आधारित जापानी तथा ब्रिटिश साम्राज्य का भी अन्त हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गया। इन सभी उदाहरणों से स्पष्ट है कि अशोक की अहिंसा के बिना भी मौर्य साम्राज्य का पतन शीघ्रता से या देर से अवश्य ही होता। अतः मौर्य साम्राज्य के पतन के लिये अहिंसात्मक नीति के कारण अशोक को विशेष उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता।

(2) अशोक अपने जीवन काल में अपने साम्राज्य में पूरी शान्ति एवं एकता को बनाये रखा। सभी उसके मित्र थे और देशान्तरों में उसका यश-सौरभ फैला हुआ था। किसी ने उसके विरुद्ध अंगुली उठाने का साहस नहीं किया। सभी क्षेत्रों में अद्भुत उन्नति हुई। अतीत के उस युग में जब कि यातायात की अनेक कठिनाइयाँ थीं — आजकल के जैसा रेल, जहाज, तार आदि की व्यवस्था नहीं थी, अशोक ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की जो भारत की सीमा को भी पार कर गया था। परन्तु इस साम्राज्य की स्थापना में किसी का एक बूँद भी रक्त नहीं बहाया गया जब कि एक कलिंग युद्ध के करते समय लाखों व्यक्ति काल-कवलित हुए थे। अतः अशोक ने भारत को सबल बनाया और इसके मस्तक को ऊँचा किया। उसने अक्षरशः सिद्ध कर दिया कि शान्ति की विजय युद्ध की विजय से कम नहीं। अतः यदि अशोक के मरने के बाद साम्राज्य में कोई कमजोरी आई तो इसके लिये वह उत्तरदायी नहीं हो सकता।

बड़े हित के लिए छोटे हित का परित्याग करना और अधिक से अधिक लोगों या सभी लोगों के कल्याण के लिए कार्य करना बहुत अच्छी बातें समझी जाती हैं। ऐसी नीतियों के लिए अशोक की प्रशंसा होनी चाहिए। राधाकुमुद मुकर्जी ने बहुत ठीक ही लिखा है — "यदि अशोक अपने पिता और पितामह का रक्त तथा लौह की नीति का अनुसरण करता तो भी कभी न कभी मौर्य साम्राज्य का पतन होता ही। लेकिन सभ्य संसार के बड़े भाग पर अशोक ने भारतीय संस्कृति का नैतिक आधिपत्य स्थापित किया और यह शताब्दियों तक उसकी ख्याति का स्मारक बना रहा और आज लगभग दो हजार से भी अधिक वर्षों की समाप्ति के बाद भी वह पूर्ण रूप से लुप्त नहीं हुआ।"

सैनिक, भौतिक और शारीरिक शक्ति से नैतिक, अध्यात्मिक और आत्मिक शक्ति अधिक शक्तिशाली एवं प्रभावशाली होती है। महत्मा गाँधी के नेतृत्व में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कांग्रेस ने सत्य और अहिंसा के आधार पर साम्राज्यवादी और हिंसावादी ब्रिटिश साम्राज्य से संघर्ष किया और अन्त में गांधीजी को सफलता भी मिली।

यह निश्चित नहीं है कि यदि अशोक सैन्यवाद और युद्ध की पुरानी नीति जारी रखता तो उसका साम्राज्य दीर्घकाल तक कायम रहता या स्थायी हो जाता। एक लेखक का कथन उल्लेखनीय है— यदि अशोक सैनिक निरंकुशवाद की नीति को अपनाता तो भी मौर्य साम्राज्य का पतन हुआ होता और उस समय उसके आलोचक सैनिकवाद की आलोचना कर उसे ही साम्राज्य के पतन के लिए उत्तरदायी बताते, जैसाकि सिकन्दर, नेपोलियन, हिटलर, मुसोलिनी आदि सैनिकवाद के उच्च पुरोहितों के विरुद्ध आरोपित किया जाता है।[1]

(3) श्री जयचन्द्र विद्यालंकार ने अपने 'भारतीय इतिहास की रूपरेखा; नामक ग्रन्थ में उपर्युक्त लेखकों के मत का खण्डन किया है। वे अशोक को मौर्य साम्राज्य के पतन के लिये उत्तरदायी नहीं मानते हैं और उनके तर्कों में तथ्य भी है। उनके ये कथन हैं—

(क) किसी एक महापुरुष की सनक या कानून सारी जाति के स्वभाव और उसके इतिहास के मार्ग को नहीं बदल सकता। यदि उस काल के भारतीयों में अपने देश को एक साम्राज्य में लाने और पड़ोस के देशों को भी उसमें सम्मिलित करने की आकाँक्षा और क्षमता थी, तो अशोक के दबाने से ही वह दब गई— ऐसा माना नहीं जा सकता। एक व्यक्ति के दबाने से दब या बदल जाने वाले राष्ट्रीय स्वभाव में साम्राज्य खड़े करने की प्रतिभा या क्षमता का होना असम्भव है।

(ख। युद्ध तथा शस्त्र के द्वारा प्रदेश-विजय के लिये कितनी कीमत चुकानी पड़ती है— इसका अनुमान कलिंग विजय से किया जा सकता है। इसका उद्देश्य तो यही होता है कि भारत में राष्ट्रीयता का विकास हो और कानूनों में समता हो। यह कार्य तो बिना कीमत चुकाये शान्ति नीति के ही द्वारा हुआ। अतः अशोक को नीति से दुगुना लाभ हुआ हानि भी नहीं हुई और उद्देश्य भी पूरा हो गया।

1 कृष्ण चन्द्र श्रीवास्तव, पूर्वोक्त, पृ० 240

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ग) अशोक की नीति ने देश की राजनीतिक एकता को मजबूत किया। स्वाधीनता की भावना सब में उत्कट होती है। यदि अशोक ऐसी नीति नहीं बरतता तो अन्यत्र विद्रोह भी हो जाते और साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो जाता। साम्राज्य-विस्तार, दाम-दण्ड-भेद से हो सकता है किन्तु साम्राज्य संगठन के लिये साभ ही आवश्यक है। धर्म-विजय की नीति एक प्रकार से शान्तिपूर्वक दखल की नीति थी। इससे अन्य देशों की प्रजा में साम्राज्य के लिये प्रेम तथा भक्ति की भावना उत्पन्न होती थी।

डा० राय चौधरी ने लिखा है— सम्राट अशोक के युद्ध की समाप्ति के प्रयासों का अन्ततः वही परिणाम निकला, जो अमेरिकी राष्ट्रपति विल्सन के प्रयासों का निकला है।

अशोक और बिल्सन ने मानव समाज में युद्ध और हिंसा, द्वेष और दुश्मनी रोक कर शान्ति और अहिंसा, दोस्ती और सद्भाव बढ़ाने के लिए प्रयास किया। वे इन आदर्शों के सम्मान एवं प्रशंसा के पात्र हैं। यदि अन्य लोगों ने अशोक और विल्सन के कल्याणकारी आदर्शों को नहीं माना तो इसके लिए वे दोषी नहीं है वल्कि अन्य लोग ही दोषी हैं। यदि सम्राट और शासक के उत्तराधिकारी कमजोर और निकम्मा हों तो इसमें सम्राट और शासक का क्या दोष है ?

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि मौर्य साम्राज्य के पतन के लिये अशोक उत्तरदायी नहीं था। यदि था भी तो आंशिक रुप में। इतना अवश्य कहा जा सकता है कि उसकी नीति के कारण मगध की सैनिक शक्ति कमजोर हो गई। इस दृष्टि से डा० राय चौधरी का मत सही है। डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने भी लिखा है कि धर्म विजय की नीति से भारतीय धर्म, सभ्यता और संस्कृति के विदेशों में विस्तीर्ण होने में चाहे कितनी ही सहायता क्यों न मिली हो, पर मगध सैनिकशक्ति को उसने अवश्य निर्बल किया।[1] अशोक ने धर्म द्वारा विश्व-विजय का जो प्रयत्न किया था, वह आदर्श की दृष्टि से चाहे कितना ही उदात्त क्यों न हो, पर एक राजा के लिये उसे कदापि समुचित नहीं माना जा सकता।[2]

---

1 प्राचीन भारत, मसूरी, 1960, पृ० 377

2 सत्यकेतु विद्यालंकार, मौर्य साम्राज्य का इतिहास, मसूरी, 1971, पृ० 194-95

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मौर्य साम्राज्य के पतन के प्रमुख कारण

मौर्य साम्राज्य के पतन के लिये निम्नलिखित प्रमुख कारण थे : –

1 दो विरोधी प्रवृत्तियों में संघर्ष-भारत में सदा से राजनैतिक क्षेत्र में दो विरोधी प्रवृत्तियों संघर्ष होता रहा है। ये प्रवृत्तिया हैं – केन्द्रीयकरण और अकेन्द्रीयकरण या विकेंद्रीयकरण।

शक्तिशाली, महत्वाकांक्षी और साम्राज्यवादी राजा, प्राचीन भारत में, सारे भारत को एक शासन में ले आने के लिये उद्योग करते रहे, वहाँ दूसरी ओर पुराने जनपदों तथा गण राज्यों में अपनी स्वतन्त्रता एवं पृथक् सत्ता को कायम रखने की प्रवृत्ति भी विद्यमान रही। जातीय दृष्टि से प्रत्येक जन अपने आप में एक इकाई था और अपने व्यवहार, चरित्र, प्रथा, परम्परा आदि के प्रति इन जनों में अगाध निष्ठा थी। ये जनपद केन्द्रीयभूत साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह कर अपनी स्वतन्त्रत सत्ता को स्थापित कर लेने के लिये सदा प्रयत्नशील रहा करते थे। केन्द्रीय राजा या सम्राट की शक्ति के निर्बल होते ही अकेन्द्रीय भाव की ये प्रवृत्तियाँ प्रबल हो उठती थीं।[1]

2 साम्राज्य की विशालता— चन्द्रगुप्त तथा अशोक ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। केन्द्र में राजधानी नहीं थी, और आजकल के जैसा समुचित यातायात का प्रबन्ध भी न था। दक्षिणी भारत पर शासन करने में मुगल सम्राटों को भी बड़ी परेशानी उठानी पड़ी थी। अशोक के उतराधिकारियों को दक्षिणी भारत पर शासन करने में और भी अधिक कठिनाई का अनुभव हुआ होगा।

3 साम्राज्य का विभाजन - साम्राज्य का विभाजन भी हो गया। जालौक ने कश्मीर में और वीरसेन या सुभागसेन ने गन्धार में स्वतन्त्र राज्य की घोषणा कर दी थी। विदर्भ भी स्वतन्त्र हो गया था।

4 राज कर्मचारियों का अत्याचार— अशोक की मृत्यु के बाद राज-कर्मचारी भी अत्याचार करने लगे। आमात्य बर्ग रक्षक के बदले भक्षक और शोषक हो गये। जनता इन आमात्यों के कुशासन से ऊब गई थी, और अशोक की सारी जनप्रियता उसकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गई थी। तक्षशिला जैसे स्थान में

1 डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, मौर्य साम्राज्य का इतिहास, पूर्वोक्त 691-92

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुष्टामात्यों के कुशासन से ही दो बार विद्रोह हुए। विद्रोह की आग सर्वत्र व्याप्त थी तभी तो अन्तिम मौर्य राजा वृहद्रथ को खुलेआम पुष्यमित्र ने मार डाला और कहीं से कोई आवाज इसके विरोध में नहीं उठी।

5 अशोक के उत्तराधिकारी — अशोक के उत्तराधिकारी या परवर्ती शासक अयोग्य और दुर्बल थे। उनमें साम्राज्य के विघटन को रोकने की न शक्ति थी और न इच्छा। उनमें प्रशासन के संगठन और संचालन की क्षमता नहीं थी।

परवर्ती शासकों ने अशोक की धर्म-विजय की नीति का महत्व नहीं समझा था। अशोक ने जिस विचार-शरणी से धर्म-विजय की नीति का प्रतिपादन एवं अनुसरण किया था, उन्होंने उसका भी अविकाल रुप से प्रयोग नहीं किया। उनके निर्बल हाथों में धर्म की नीति सर्वथा असफल हो गई [1]

यदि परवर्ती शासक बुद्धिमान और दूरदर्शी होते तो वे समझ सकते थे कि धर्म विजय की नीति से सैन्य शक्ति कमजोर हो रही है और इससे विदेशी आक्रमण को प्रोत्साहन मिल रहा है तो वे अशोक की नीति में परिवर्तन ला सकते थे किन्तु वे ऐसा नहीं कर सके।

इन अयोग्य और निःशक्त राज कुमारों में अपसी फूट का इतना प्राबल्य हुआ कि राज्य को समुचित व्यवस्था करने या कराने की इन्हें चिन्ता भी नहीं थी। अतः सर्वत्र अशान्ति और विद्रोह का बोल-बाला हो गया।

6 राष्ट्रीयता का अभाव – मौर्य युग में राष्ट्रीयता का अभाव था। राजनैतिक क्षेत्र में राष्ट्रीय एकता जैसी कोई चीज ही नहीं थी। प्रशासन में जनता की भागीदारी नहीं थी। यवनों के हमले का संगठित रुप से कभी विरोध नहीं हुआ। पोरस और सुभगसोन को सिकन्दर तथा अन्तियोकस के साथ संघर्ष में केन्द्र से या किसी अन्य राजा से सहायता नहीं मिली थी।

7 केन्द्रीय प्रशासन – मौर्यकाल में प्रशासन पूर्णरुप से केन्द्रीत था। राजा शक्तिशाली था। राज्य के सभी पदाधिकारी और कर्मचारी उसी के प्रतिनिष्ठा रखते थे। स्थानीय या जनप्रतिनिधि संस्थाओं का अभाव था। लोगों के जीवन में बहुत हस्तक्षेप होता था।

---

1 डा० सत्यकेतु विद्यालंकार, मौर्य साम्राज्य का इतिहास, पूर्वोक्त, पृ० 695

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

8 विदेशी हमले— इस अवसर से लाभ उठाकर अनेक यूनानी तथा बैक्ट्रियन आक्रमणकारी भारत का द्वार खटखटाने लगे। जिस उत्तरी भारत मेंसिकन्दर और सेल्यूकस जैसे महान् विजेताओं के पैर नहीं टिके थे वही अब अनेक आक्रमण होने लगे और विदेशी राज्य स्थापित हो गये।

9 गुप्तचर विभाग में संगठन का अभाव—अशोक के समय से ही गुप्तचर विभाग ढीला-ढाला होने लगा था। चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में जैसा वह संगठित था वैसा अशोक के बाद वह विभाग संगठित नहीं रह सका। विशाल मौर्य साम्राज्य में जिसमें समुचित यातायात का अभाव था, संगठित गुप्तचर विभाग की नितांत आवश्यकता थी। इसके अभाव में सुदूर प्रान्तों या किसी षडयन्त्र की जानकारी नहीं प्राप्त होती थी।

10 पुष्यमित्र शुंग द्वारा बृहद्रथ का वध— इस तरह अपने को संभालने में असमर्थ, जनमत के अभाव में लड़खड़ाता हुआ मौर्य साम्राज्य अब पतन के कगार पर खड़ा था, जिसे पुष्यमित्र के एक साधारण धक्के ने समाप्त कर दिया। शान्ति-वादी नीति के कारण सैनिक असन्तुष्ट थे, और परिवर्त्तन के लिए उत्सुक थे क्योंकि उनकी सामरिक भावना की अभिव्यक्ति के लिए अवसर नहीं मिलता था। इससे प्रोत्साहित होकर सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने अन्तिम मौर्य सम्राट बृहद्रथ का वध कर दिया और मगध की गद्दी पर अधिकार कर लिया।

रोमिला थापर ने केन्द्रीय प्रशासन और राष्ट्रीय भावना के अभाव को मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए प्रमुख कारण माना है। डा० सत्यकेतु विद्यालंकार के मतानुसार अकेन्द्रीभाव की बलवती प्रवृत्तियाँ, जनपदों एवं गण-राज्यों में अपनी पृथक् सत्ता तथा स्वतन्त्रता की अनुभूति, यवनों के आक्रमण और धर्म-विजय की नीति का दुरुपयोग शक्तिशाली मौर्य साम्राज्य के पतन के प्रमुख कारण थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.